www.nacoonline.org

NACO समाचार

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन
की समाचार पत्रिका

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

खंड IV अंक 4

अक्टूबर-दिसम्बर 2008

भारत में चुप्पी को तोड़ा लोगों को जोड़ा

आशा बनकर आई रेड रिबन एक्सप्रैस

विश्व एड्स दिवस

रेड रिबन एक्सप्रैस की एक वर्ष लंबी यात्रा

पाठकों के पत्र

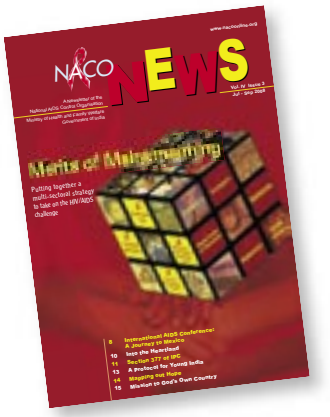

नाको समाचार ने एचआईवी और एड्स द्वारा 15–49 वर्ष की आयु के लोगों के लिए प्रस्तुत वास्तविक खतरे पर ध्यान केंद्रित किया है। किंतु इसके वास्तविक प्रबंधन और प्रशासन से जुड़े लोगों के अलावा इस समस्या के बारे में जागरूकता काफी कम है। इसलिए इसे मुख्य धारा में लाना हमारे सरोकार का मुख्य विषय होना चाहिए ताकि पूरे समुदाय को बराबर का साझेदार बनाया जा सके।

यह पत्रिका एक ऐसी पहलकदमी है जिसकी काफी जरूरत थी और मुझे खुशी है कि सही मुद्दों पर बल दिया जा रहा है। निगमित निकायों और गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा किये जा रहे प्रयास काफी मूल्यवान हैं क्योंकि वे सरकार की पहलकदमी को बल पहुंचाते हैं। साथ ही मुझे सामाजिक रूप से प्रासंगिक जानकारी का कॉमिक स्ट्रिप के रूप में प्रस्तुतीकरण अच्छा लगा।

मनोज नाथ
महानिदेशक
नागरिक सुरक्षा
बिहार सरकार

• • •

नाको समाचार के नवीनतम अंक में भारत में एचआईवी और एड्स से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों को व्यापक रूप से शामिल किया गया है। यह जानकर खुशी होती है कि किस तरह विभिन्न राज्य और मंत्रालय इस चुनौती का जवाब दे रहे हैं। यह एचआईवी और एड्स के विरुद्ध संघर्ष करने वाले विभिन्न हिस्सेदार संगठनों के प्रयासों और इच्छाओं को उजागर करता है। पत्रिका कुछ पहलुओं पर गहरी जानकारी प्रदान करती है और इसे भली भांति तैयार किया गया है।

इस पत्रिका का अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कराना उपयोगी रहेगा। साथ ही अगर सर्वाधिक असुरक्षित समूह, यानी युवाओं को यौन व्यवहार के नैतिक आयामों से अवगत कराया जाये तो इससे सहायता प्राप्त होगी।

विजय कुमार वर्मा
प्रधान सचिव
निगरानी विभाग, बिहार सरकार

मुख्यधाराकरण से संबंधित लेख कुछ महत्वपूर्ण जमीनी मुद्दे उठाता है, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण है कार्यस्थल में एचआईवी और एड्स के साथ जीने वालों को जोड़ना। ऐसी प्रक्रियाओं से एचआईवी और एड्स से जुड़े लांछन और भेदभाव को समाप्त करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, यह पत्रिका जानकारी का एक दिलचस्प माध्यम है और इसे व्यापक रूप से प्रसारित किया जाना चाहिए।

वसुधा मोहंका
अनुश्रवण एवं सूचना अधिकारी
बुनियादी परियोजना
लेपरा सोसाइटी
इंदौर

एआरटी लेने वाले लोगों की संख्या*

नाको की सहायता से संचलित एआरटी केंद्र	193795
इंटरसेक्टोरल साझेदार	2479
जीएफएटीएम चक्र–II केंद्र	2489
एनजीओ क्षेत्र	474
कुल योग	199237

*31 दिसंबर, 2008 तक

कृपया अपने लेख और सुझाव भेजकर नाको समाचार को अधिक सहभागितापूर्ण बनाने में हमारी मदद करें। हमें निम्न विषयों पर अपने लेख भेजें:

- केस स्टडीज़
- क्षेत्रीय कार्यक्रमों से संबंधित टिप्पणियां और अनुभव
- समाचार
- प्रेरक प्रसंग
- सुझाव

नाको समाचार के पिछले अंक और एचआईवी/एड्स पर अधिक जानकारी के लिए लॉग ऑन करें:
www.nacoonline.org या ई-मेल करें:
mayanknaco@gmail.com

- संपादक

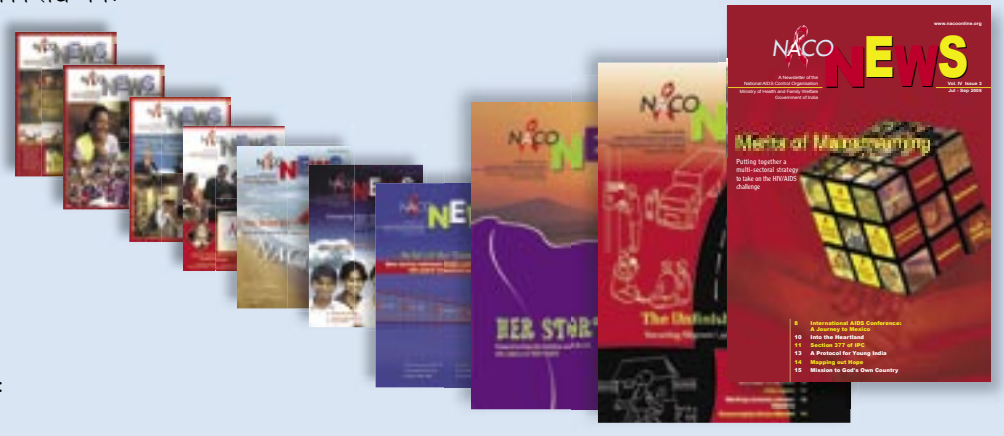

महानिदेशिका की कलम से

सबसे पहले मैं अपने सभी साझेदारों, अनुदानकर्ताओं, क्रियान्वयन एजेंसियों और गैर–सरकारी संस्थाओं को नये वर्ष की शुभकामनाएं देना चाहूंगी। इस वर्ष की शुरूआत अपार संभावनाओं और भारी आशाओं से भरपूर रही है। हमने 1.9 लाख लोगों को मुफ्त एआरटी प्रदान करके अपने 190 केंद्रों के माध्यम से एआरटी सेवाओं का विस्तार किया है। इसके अलावा निजी क्षेत्र में लगभग 35,000 लोग एआरटी प्राप्त कर रहे हैं। हमने कई अस्पतालों में दूसरी पंक्ति का एआरटी उपचार आरंभ किया है। आशा है कि हम शीघ्र ही एनएसीपी–III का लक्ष्य हासिल कर लेंगे।

एचआईवी और एड्स के क्षेत्र में विश्व का सबसे बड़ा एडवोकेसी–प्रयास होने के साथ–साथ रेड रिबन एक्सप्रैस ने उन सब बातों पर पुनः बल दिया है, जो हम पहले से जानते हैं। काफी कुछ हासिल किया जा चुका है, पर और बहुत कुछ करने की जरूरत है – खासकर भारत के उन अंदरूनी इलाकों में जहां जानकारी और समाचार मुश्किल से पहुंच पाते हैं। इस तरह की जनसंचार माध्यम पहलकदमी में ही – जो लोगों का इंतजार करने के बजाय सीधे उन तक पहुंचती है – बदलाव लाने की शक्ति है। लोगों ने जिस तरह से प्रतिक्रिया की, सवाल पूछे और स्वयं अपने अनुभवों के बारे में बताया, उससे अत्यंत सकारात्मक और स्वस्थ दृष्टिकोण साफ तौर पर उभर कर आया। हम कार्य की इस रफ्तार को बनाये रखना चाहते हैं और उम्मीद है हमारी राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियां नाको की पूरी सहायता के साथ और भी कल्पनाशील ढंग से जमीनी स्तर के कार्य में तेजी लाएंगी।

विश्व एड्स दिवस नये सिरे से वचनबद्धताएं करने, समुदायों को अपने काम की ताजा जानकारी देने और संक्रमित एवं प्रभावित लोगों को लेकर बेहतर समझ और समानुभूति पैदा करने हेतु मानव शृंखला का विस्तार करने का समय होता है। हर वर्ष, एचआईवी के ध्येय के साथ जुड़ने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हो रही है। अपने–अपने सामाजिक–सांस्कृतिक नवाचार के अनुसार हर राज्य के अपने अलग कार्यक्रम हैं। इस वर्ष देश में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर कार्यक्रम तो आयोजित किये गये, पर मुम्बई में हुए धमाकों को देखते हुए उनमें इतना जोश नजर नहीं आया। इस दौरान, प्रमुख कार्यकलाप रेड रिबन एक्सप्रैस अभियान रहा जिसे गत वर्ष विश्व एड्स दिवस पर आरंभ किया गया था और इस वर्ष विश्व एड्स दिवस पर जिसका समापन हुआ। यह ट्रेन अनेक राज्यों, जिलों और गांवों से गुजरते हुए अनेक अनुभव अपने साथ बटोर कर वापस आई। दस्तावेजीकरण करके इनका आम लोगों के बीच प्रचार–प्रसार किया जाएगा।

संशोधित जीवन कौशल शिक्षा टूलकिट में सभी हिस्सेदारों से प्राप्त सुझाव शामिल किये गये हैं। हम आशा करते हैं कि सावधानीपूर्वक चुने गए लगनशील प्रशिक्षकों का दल इनका पूरा उपयोग करेगा और युवाओं तक पहुंच बनाने के प्रभावकारी तरीके ढूंढने में सफल होगा। जहां हम उपचार, सहायता, देखरेख और स्वैच्छिक जांच पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, वहां एचआईवी और एड्स के क्षेत्र में कार्यरत हम सभी लोगों के लिए यह जानना जरूरी है कि रोकथाम ही हमारे कार्यक्रम की कुंजी है। हम किसी भी चरण में आत्मसंतुष्ट नहीं हो सकते। युवा लोग छोटी आयु में ही तमाम प्रकार के संचार माध्यमों के संपर्क में आ जाते हैं, इसलिए यह जरूरी है कि हम अपनी पारंपरिक मानसिकता को त्याग कर स्कूलों, कॉलेजों और समुदायों तक पहुंच बनाने के तरीके तलाश करें। इससे हम ऐसे मंच तैयार कर सकेंगे जिनमें स्वस्थ विचार–विमर्श किया जा सकेगा जिससे अंततः, न केवल यौन स्वास्थ्य की दृष्टि से, बल्कि व्यापक नागरिक और सामाजिक अर्थ में, उत्तरदायी व्यवहार जन्म लेगा।

एनएसीपी–III के आगे बढ़ने के साथ–साथ लक्ष्यगत हस्तक्षेपों का विस्तार भी होगा। वर्ष 2009 में, टीआई को जनता के सफल स्वामित्व, प्रबंध और नेतृत्व के अंतर्गत आने वाले समुदाय–आधारित संगठनों में धीरे–धीरे विकसित करने की प्रक्रियाएं और तरीके निर्धारित किये जाएंगे।

इस नये वर्ष की – जो क्षितिज पर नजर आती भूमंडलीय मंदी को देखते हुए हम सबकी कई तरह से परीक्षा लेने जा रहा है – हर किसी को मेरी सर्वोत्तम शुभकामनाएं।

के. सुजाता राव
सचिव और महानिदेशिका
राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन

जीवन कौशल शिक्षा (एलएसई) पर क्षेत्रीय कार्यशालाओं ने तय की कार्यावली

राज्यों में चयनित संसाधन व्यक्तियों द्वारा एलएसई पहलकदमी का नेतृत्व

एलएसई पर क्षेत्रीय प्रशिक्षक–प्रशिक्षण

एलएसई कार्यक्रम पर, जिसे पहले एईपी यानी किशोर शिक्षा कार्यक्रम के नाम से जाना जाता था, 29 जुलाई, 2008 को एक राष्ट्रीय परामर्श बैठक का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता नाको की सचिव और महानिदेशिका ने की। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि एससीईआरटी और राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियां छह संसाधन व्यक्तियों को नामांकित करेंगी जिनमें शिक्षक, माता–पिता और स्थानीय गैर–सरकारी संस्थाएं शामिल होंगी। ऐसे लोगों को मिला कर जिन्हें बच्चों के साथ कार्य करने का पूर्व अनुभव हो; जो विद्यालय प्रणाली और उसके कार्य से अवगत हों; तथा जेंडर के प्रति संवेदनशील हों और जिन्हें समूह वातावरण की स्पष्ट समझ हो, एक कोर दल के गठन को अंतिम रूप दिया गया।

इसके बाद विभिन्न राज्यों में चयनित संसाधन व्यक्तियों के लिए क्षेत्रीय प्रशिक्षक–प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गईं (तालिका देखें)।

क्षेत्रीय प्रशिक्षकों की प्रशिक्षण कार्यशाला

दिनांक	स्थान	सम्मिलित राज्य
15–18 अक्टूबर, 2008	हैदराबाद	आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पुडुचेरी और तमिलनाडु
4–7 नवम्बर, 2008	नई दिल्ली	हिमाचल प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और झारखंड
18–21 नवम्बर, 2008	गुवाहाटी	असम, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मिजोरम, गोवा और मेघालय
17–20 दिसम्बर 2008	नई दिल्ली	केरल, त्रिपुरा, नागालैंड, मणिपुर, गुजरात और दादरा एवं नगर हवेली

कार्यशाला का उद्देश्य पारस्परिक संपर्क वाले कार्यक्रम ढांचे के माध्यम से अधिकतम सहभागिता सुनिश्चित करना था। कार्यशाला में पूर्व–परीक्षा प्रश्नावली के माध्यम से समूह के सदस्यों के ज्ञान के स्तर और जीवन कौशल शिक्षा संबंधी उनकी समझ का आकलन किया गया। हर प्रशिक्षक को सीबीएसई, नाको, यूनिसेफ, एनसीईआरटी और शिक्षा विभाग द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किये गये मॉड्यूल को लेकर अपनी अनूठी कार्यशैली विकसित करने को कहा गया। इस मॉड्यूल का उद्देश्य जानकारीयुक्त विकल्प चुनने हेतु किशोर–किशोरियों का सशक्तीकरण करना और उनमें मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य संबंधी सरोकारों से निपटने हेतु जीवन कौशल विकसित करना है।

हर राज्य ने एक कार्य–योजना बना कर प्रस्तुत की। कार्य–योजनाओं के मुख्य बिंदुओं में क्षमता–निर्माण संबंधी पहलू, जागरूकता, जिला स्तर पर संवेदीकरण कार्यक्रम और हिस्सेदारों की बैठकें शामिल थीं।

संशोधित एलएसई टूलकिट पर प्रशिक्षकों का क्षेत्रीय प्रशिक्षण

अनुभवों का आदान–प्रदान और एलएसई टूलकिट के प्रयोग के लिए अपनाई जाने वाली पद्धतियों पर राज्य–वार कार्य योजनाएं प्रशिक्षण कार्यक्रम की मुख्य विशेषता थीं। इस चार–दिवसीय क्षेत्रीय प्रशिक्षक–प्रशिक्षण कार्यशाला में युवाओं के बीच नये संक्रमणों की रोकथाम के लिए सटीक ज्ञान और कौशल पर बल दिया गया। सहभागियों को टूलकिट तैयार करने और स्थानीय संदर्भ के ढांचे में उसे संशोधित करने के लिए राज्यों द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया पर ताजा जानकारी दी गई।

सहभागियों को बताया गया कि सही सोच वाले राज्य संसाधन व्यक्तियों और जिला संसाधन व्यक्तियों के चयन पर ध्यान केंद्रित करते हुए टूलकिट को लेकर मंजूरी प्राप्त करने के लिए अलग–अलग हिस्सेदारों के साथ एडवोकेसी

कार्यशालाओं की एक शृंखला आयोजित की जाएगी। उन्हें यह जानकारी भी दी गई कि मॉड्यूलों के संबंध में अपनाई जाने वाली पद्धतियां सहभागितापूर्ण और छात्रों को समझ आने लायक होनी चाहिए; तथा एक स्तर से अगले स्तर तक न्यूनतम सूचना क्षति सुनिश्चित करने के प्रयास किये जाने चाहिए।

ममता स्वास्थ्य संस्था के संसाधन व्यक्तियों ने बताया कि अगर प्रतिबद्धता और स्वामित्व की भावना हो तो राज्यों में एलएसई का क्रियान्वयन सफल हो सकता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिन विभिन्न मुद्दों के संबंध में सहभागियों के सरोकारों पर ध्यान दिया गया वे इस प्रकार थे – टूलकिट में

कार्यशाला के दौरान एक कार्यकलाप

प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिन विभिन्न मुद्दों के संबंध में सहभागियों के सरोकारों पर ध्यान दिया गया वे इस प्रकार थे - टूलकिट में क्या है; इसे और सहभागितापूर्ण कैसे बनाया जा सकता है? राज्य-विशिष्ट एडवोकेसी पहलकदमियों का उपयोग कैसे करना है?

क्या है; इसे और सहभागितापूर्ण कैसे बनाया जा सकता है; नये खेल और कार्यकलाप क्या हैं; राज्य–विशिष्ट एडवोकेसी पहलकदमियों का उपयोग कैसे करना है; और रिपोर्टिंग के मानीटरिंग टूल्स के समान फार्मेट का उपयोग कैसे करना है। इसके साथ ही स्कूल स्तर के प्रशिक्षण और रेड रिबन क्लबों के संबंध में जानकारी तथा एलएसई को लेकर प्रभाव–अध्ययनों पर भी बल दिया गया।

जिन विवरणों को शामिल किया जा सकता था वे ज्ञान–केंद्रित जीवन कौशल, कार्य–पुस्तिका के अभ्यासों, संयम की दिशा में झुकाव, मास्टर प्रशिक्षकों की भूमिका, बहुविषयी क्षेत्रों के बारे में माता–पिता, बच्चों और शिक्षकों के विचारों पर आधारित थे। साथ ही माहवारी, स्वप्न

(शेष पृष्ठ 7 पर)

राज्य-वार कार्य-योजनाएं

जीवन कौशल विकास पर विस्तार से विचार–विमर्श किया गया और सहभागी राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों ने मैनुअलों के कुछ हिस्सों में निम्न संशोधन सुझाए:

कर्नाटक: एलएसई के अंतर्गत 13,000 स्कूलों को शामिल करने वाली एक योजना के साथ तत्काल एडवोकेसी कार्यकलाप आयोजित करने के लिए तैयार।

पुडुचेरी: मार्च 2009 में स्कूल–स्तर के कार्यकलापों के लिए योजना बनाई जाएगी। उनके लिए यह कार्यक्रम का पहला वर्ष है जिसके लिए वे अच्छी तैयारी करके रखना चाहते थे।

महाराष्ट्र: राज्य संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने, टूलकिट के अनुवाद, जीवन कौशल, दस्तावेजीकरण और आरआरसी संबंधी तैयारी के साथ एक मजबूत एडवोकेसी योजना आरंभ कर रहा है।

तमिलनाडु: प्रशिक्षण, सामग्री, स्कूल सत्रों और एडवोकेसी की दृष्टि से कार्यक्रम अनुसूची तैयार की गई।

आंध्र प्रदेश: राज्य ने अपनी योजना प्रस्तुत की जिसमें हर कार्यकलाप के लिए स्पष्ट रूप से समय सीमा तय की गई थी। तेलुगू और उर्दू में टूलकिट के अनुवाद और संपादन का कार्य पूरा किया गया और नाको से मंजूरी मिलने के बाद यह मुद्रण के लिए तैयार है।

सिक्किम: उनसे प्राप्त प्रतिक्रिया यह थी कि संशोधित एलएसई की समाग्री अच्छी है। उनका एकमात्र सुझाव यह था कि स्थानीय संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ चित्रों को बदला जाना चाहिए।

अरुणाचल प्रदेश: संशोधित सामग्री में शिक्षक हैंडबुक, सुगमकर्ता मार्गदर्शिका, परिकलित (रेडीरेकनर) और एडवोकेसी किट शामिल होने चाहिए। साथ ही सामग्री के आरंभ और अंत में संक्षिप्तियों के पूरे रूप और कठिन शब्दों के अर्थ दिये जाने चाहिए; साथ ही किशोर–किशोरियों के शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संकेतकों को दर्शाने वाले मानचित्र के साथ राज्य–विशिष्ट तिथि तालिका भी शामिल की जानी चाहिए; किट में विषयों से संबंधित आडिओ–विजुअल सामग्री और साथ ही जागरूकता संबंधी सामग्री भी शामिल की जानी चाहिए। आवरण पृष्ठ और चित्र राज्य के स्थानीय संदर्भ के अनुसार होने चाहिए; स्थानीय स्थितियों, नामों और चरित्रों का उपयोग किया जाना चाहिए। भाग–1 "किशोर–किशोरियों को समझना" में शिक्षक कार्य पुस्तिका पहले देनी चाहिए और "जीवन कौशलों का परिचय" अंत में दिया जाना चाहिए; जरूरत के अनुसार विषय–वस्तु और चित्रों, प्रश्नों और उत्तरों का क्रम निर्धारित किया जाना चाहिए; और "किशोर–किशोरियों के लिए देखरेख एवं सहायता सेवाएं" को शिक्षक हैंडबुक का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

मिजोरम: राज्य ने कुछ चित्रों को बदलने का आग्रह किया गया। उनका सुझाव था कि नशीली दवाओं के नाम भी बताने चाहिए, केवल उनके परिणाम नहीं। राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा पूरक टूलकिट तैयार किया जाना चाहिए।

गोवा: एसटीडी, मानसिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा पर अध्याय जोड़ें। चरित्रों के नाम स्थानीय होने चाहिए। जीवन कौशल विकास के संबंध में कुछ शीर्षकों और तस्वीरों पर आपत्ति की गई जैसे कि पैना ब्लेड, उच्च जोखिम (दाढ़ी बनाने के लिए एक दूसरे के ब्लैड का इस्तेमाल करना) आदि। उनका कहना था कि इससे भ्रम पैदा होता है।

असम: जहां असम की एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने डाइट/शिक्षा विभाग को एलएसई के लिए निधियां जारी की हैं, वहीं मानीटरिंग और मूल्यांकन के लिए निधियां उपलब्ध नहीं हैं।

मेघालय: स्थानीय समझ के मुताबिक नाम बदलना।

सुरक्षित रक्त तक आसान पहुंचः एनवीबीडीडी का आदर्श–वाक्य

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस (अक्टूबर 1) के मौके पर आयोजित सभी आयोजनों का मुख्य विषय था रक्त की कमी को दूर करना और लोगों को आसानी से रक्त उपलब्ध कराना

रक्त सुरक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सभी संगठनों ने यह शपथ ली कि पूरे वर्ष दूर–दराज के क्षेत्रों सहित सभी क्षेत्रों में वे रक्त की कमी को दूर करने और सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण रक्त और रक्त घटक उपलब्ध कराने के लिए कार्य करेंगे।

भारतीय रक्ताधान और इम्यूनोहेमोटोलॉजी सोसाइटी (आईएसबीटीआई), राष्ट्रीय रक्ताधान परिषद् (एनबीटीसी), राज्य रक्ताधान परिषद्, एनसीटी, दिल्ली, और अपोलो अस्पताल ने राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस मनाने हेतु अक्टूबर 1, 2008 को राजधानी में स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने और 100 से अधिक बार रक्तदान कर चुके रक्तदाताओं को सम्मानित करने के लिए एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया। विभिन्न राज्य इकाइयों ने उन 31 रक्तदाताओं के नामों की सिफारिश की जो 100 बार रक्तदान कर चुके है। इस अवसर पर उनको सम्मानित किया गया। रक्तदान को लेकर एक नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन भी किया गया।

राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के मौके पर महाराष्ट्र के सभी ब्लड बैंकों में 30,000 पोस्टर और 5,00,000 पर्चे वितरित किये गये।

चंडीगढ़ की सड़कों पर उमड़े स्वैच्छिक कार्यकर्ता

चंडीगढ़ में रक्तदान दिवस 'कैंडल लाइट मार्च' आयोजित करके मनाया गया। शहर की मनोरम सुखना झील पर जगमगाती लाल टोपियों का समुद्र उमड़ पड़ा, जब 500 स्वैच्छिक कार्यकर्ता मोमबत्तियां हाथ में लिये चले और उन्होंने स्वैच्छिक रक्तदान की शपथ ली और बताया कि नियमित रक्तदान करने से उन्हें कितनी खुशी होती है।

महाराष्ट्र में व्यापक आईईसी अभियान

महाराष्ट्र की राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने स्वैच्छिक रक्तदान को प्रोत्साहित करने के लिए एक सुनियोजित आईईसी रणनीति का कार्यान्वयन किया। राज्य के सभी ब्लड बैंकों में 30,000 पोस्टर और 5,00,000 पर्चे वितरित किये गये। अखबारों और पत्र–पत्रिकाओं में उच्च प्रभाव वाला समानांतर अभियान चलाने के साथ–साथ एक महीने तक रेडियो पर स्थानीय भाषा में संदेश प्रसारित किये गये। कई अखबारों में विज्ञापन और विशेष रिपोर्ट प्रकाशित की गईं। तीन महीनों तक राज्य परिवहन निगम की बसों के 125 पैनलों पर आकर्षित संदेश और नारे दर्शाए गये। रक्त सुरक्षा और स्वैच्छिक रक्तदान के महत्व पर विभिन्न कार्यक्रम प्रसारित किये गये। राज्य में मोबाइल फोन ग्राहकों को "रक्तदान करें, जीवन बचाएं" के संदेश के साथ एसएमएस किये गये। बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और समुदायों के बीच प्रभात फेरियों और रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया।

चंडीगढ़ में कैंडल लाइट मार्च

अगरतला में स्थानीय गैर–सरकारी संस्थाओं और नागरिक कल्याण सोसाइटियों ने संभाली कमान

अगरतला में 11 उप–जिलों और 2 जिला मुख्यालयों ने स्थानीय गैर–सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर लोगों को भारी तादाद में लामबंद किया। एकजुटता के इस व्यापक प्रदर्शन में नेहरू युवा केंद्र संगठन, भारतीय जनवादी युवा फेडरेशन, स्थानीय क्लबों, अकादमिक संस्थाओं, स्वास्थ्य और पेशेवर एसोसिएशनों, पंचायत समितियों और नगर पंचायतों सभी ने हाथ बंटाया।

इस अवसर पर एक जन रैली का आयोजन किया गया जिसका दूरदर्शन से प्रसारण किया गया। समाज के विभिन्न हिस्सों को परिधि में लेते हुए स्कूलों में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, आवासीय इलाकों में नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन किया गया और रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया। अक्टूबर 2 को एक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। इसके बाद एक विचार–विमर्श का आयोजन किया गया जिसमें स्वैच्छिक रक्तदान पर एक पोस्टर और पुस्तक का विमोचन किया गया। नागरिक कल्याण सोसाइटियों ने भी एड्स और सुरक्षित

रक्ताधान पर जागरूकता शिविरों का आयोजन किया।

रक्त की कमी दूर करने के लिए उत्तराखंड के प्रयास

राज्य सरकार ने रक्तदाताओं का विस्तृत डाटाबेस बनाने का फैसला किया है। इस विषय पर स्कूली छात्रों को संवेदित करके उन्हें कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल करने की विस्तृत योजना बनाई गई है ताकि वे अगली पीढ़ी के सक्रिय रक्तदाता बनें। इस संबंध में लायन्स रक्त बैंक और हरिद्वार के सीएमएस के बीच एक अनुबंध हस्ताक्षरित किया गया। सचल रक्तदान बैंक वाहन प्राप्त करने का प्रबंध किया गया है और राज्य में चौबीसों घंटे हर दिन ये वाहन उपलब्ध रहेंगे।

हरिद्वार में एक शिविर का आयोजन किया गया जिसमें पर्याप्त मात्रा में रक्त एकत्र किया गया। एनबीटीसी के मार्गनिर्देशों के अनुसार देहरादून में एक सहायक कल्याण समिति का गठन किया गया है जिसे राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी से निधियां प्राप्त होंगी और जो स्थानीय समुदाय के हितों की पूर्ति करेगी।

शिमला में युवाओं को नियमित रक्तदाता बनने हेतु प्रेरणा

शिमला में 1 अक्टूबर को एक उत्सवपूर्ण नजारा देखने में आया जब

सैंचुरियन रक्तदाताओं का सम्मान

यहां स्वैच्छिक रक्तदान के बारे में पोस्टर, प्लेकार्ड, बैनर और झंडे लहराते दिखे। युवाओं तक प्रतियोगिताओं, वार्ताओं और बातचीत द्वारा पहुंच बनाई गई। रक्तदान संबंधी कई भ्रमों का निवारण किया गया और युवाओं को रक्तदान करने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

रोहतक के रक्तदाताओं का असाधारण सम्मान

रोहतक के पीजीआईएमएस में रक्तदाताओं को सम्मानित करने के लिए 12 दिसंबर, 2008 को एक समारोह आयोजित किया गया। अस्सी से अधिक नियमित रक्तदाताओं, 96 स्वैच्छिक रक्तदान संस्थाओं और 13 सर्वोत्तम संगठनों को राज्य सम्मान से नवाजा गया।

इस क्षेत्र में काम करने वाले अधिकतर लोग नाम कमाने और कुछ पाने की अपेक्षा किये बिना यह कार्य करते हैं, इसलिए इस तरह के सम्मान से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि समुदाय और प्रशासन उनके प्रयासों का सम्मान करता है।

समारोह में शामिल कई लोगों की आंखें गीली हो आईं और कई सहभागियों ने स्वैच्छिक रक्तदान के ध्येय को समर्थन देने की शपथ ली।

■ डॉ देबशीष गुप्ता
कार्यक्रम अधिकारी
रक्त सुरक्षा, नाको

जीवन कौशल ...

(पृष्ठ 5 का शेष)

दोष, शारीरिक बदलावों और प्रश्न बाक्स को लेकर समूह कार्य किया गया। मुख्य संदेश इस संबंध में थे कि इन मुद्दों को लेकर जितना संभव हो सामान्य और स्वतः स्फूर्त रूप से काम किया जाना चाहिए।

झारखंड के "उड़ान" अनुभव की लोगों ने काफी सराहना की। इसके अंतर्गत एलएसई कार्यक्रम के लक्ष्य, कार्यकलाप, उत्तरदायित्व, राज्य एलएसई कार्यक्रम की समीक्षा और प्रशिक्षण, जरूरी आकलन, कक्षा 9 और 11 के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार करना और अनुकूल संचार माध्यम एडवोकेसी जैसे विषय शामिल थे।

दिल्ली की संस्था एक्सप्रैशन्स इंडिया ने – जो किशोर–किशोरियों के मुद्दों पर

युवाओं को यह बताया गया कि कैसे वे रेड रिबन क्लबों के सदस्य बन कर बदलाव के वाहक बन सकते हैं। दक्षिण में निगमित क्षेत्र की पहलकदमियों से स्कूलों और कॉलेजों में बड़े पैमाने पर जागरूकता फैलाने में भी मदद मिली।

काम करती है – नशीली दवाओं के सेवन के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किये। पोस्टरों और चार्ट के माध्यम से आईईसी सामग्री प्रदर्शित की गई। युवाओं को यह बताया गया कि कैसे वे रेड रिबन क्लबों के सदस्य बन कर बदलाव के वाहक बन सकते हैं। दक्षिण में निगमित क्षेत्र की पहलकदमियों से स्कूलों और कॉलेजों में बड़े पैमाने पर जागरूकता फैलाने में भी मदद मिली।

■ बिलाल नकाती
टीओ (आईईसी और मेनस्ट्रीमिंग), नाको

नाको अपडेट

भारत में एचआईवी संक्रमण: ताजा स्थिति

नाको के प्रभावकारी कार्य के फलस्वरूप सेवाओं तक लोगों की पहुंच बढ़ी है। राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों, अनुदानकर्ताओं और गैर–सरकारी संगठनों के साथ मिल कर किये गये ठोस जागरूकता प्रयासों से व्यवहार बदलाव में मदद मिली है। निम्नलिखित ग्राफ यह जानकारी देते हैं कि स्थिति में अब तक कितना बदलाव आ चुका है।

आयु के आधार पर एचआईवी से संक्रमित व्यक्तियों की अनुमानित संख्या (% में)

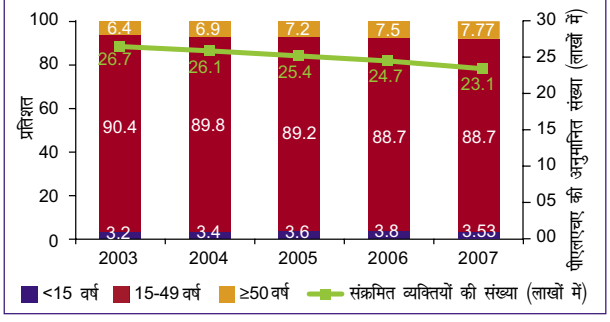

भारत में अनुमानित एचआईवी संभावित वयस्कों की संख्या वर्ष 2007 में 0.34% है

एचआईवी से संक्रमित व्यक्तियों का लिंग-वार विभाजन (2007)

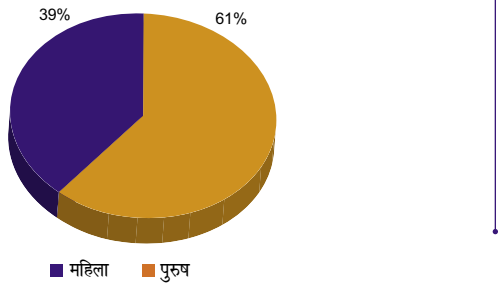

विभिन्न आबादी वाले समूहों के बीच एचआईवी संक्रमण, 2007 (% में)

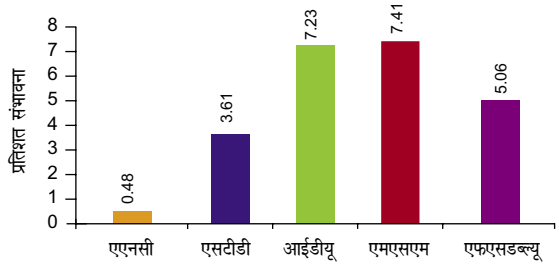

आईसीटीसी में कुल सूचित किए गए एड्स के मामले जनवरी से अक्टूबर 2008 तक: 2,29,935

एड्स के सूचित किए गए मामलों का आयु के आधार पर विभाजन (जनवरी से अक्टूबर, 2008)

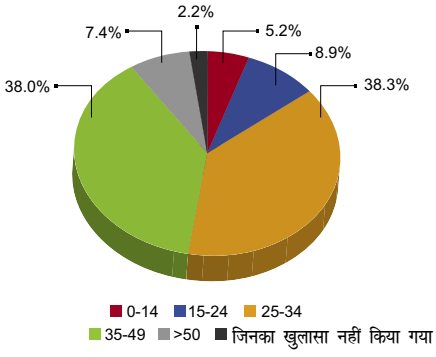

जनवरी से अक्टूबर, 2008 के बीच पता लगाए गए एचआईवी पॉज़िटिव मामलों में संचरण की पद्धतियां

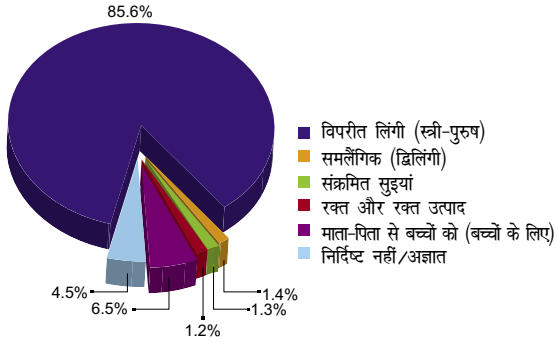

वित्तीय प्रगति

एनएसीपी-III निवेश योजना
कुल 11,585 करोड़ रुपये

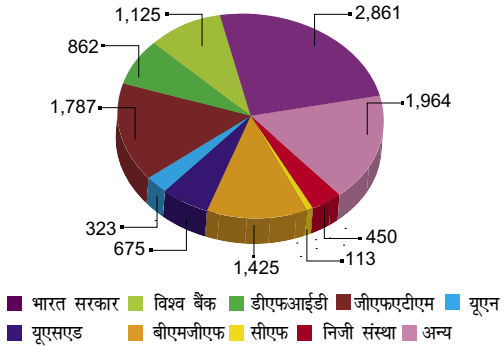

वर्ष-वार वित्तीय प्रगति

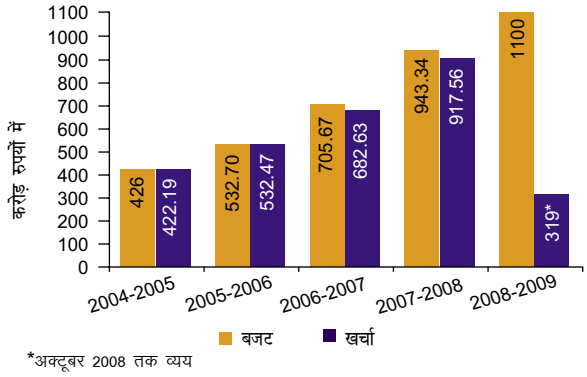

*अक्टूबर 2008 तक व्यय

जागरूकता और कंडोम प्रोत्साहन

आम जनता के बीच एचआईवी संबंधी जागरूकता (बीएसएस 2001 और 2006)

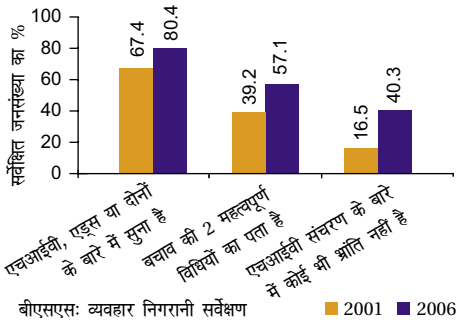

सूचित किए गए अनियमित साथियों के साथ यौन संपर्क (2006)

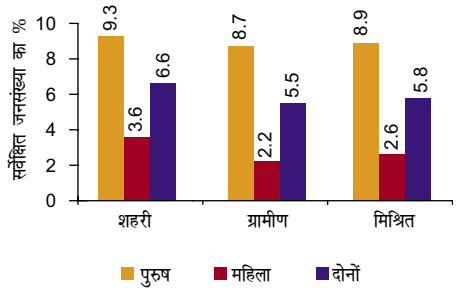

अनियमित साथी के साथ पिछले यौन संपर्क में कंडोम का प्रयोग (बीएसएस 2001 और 2006)

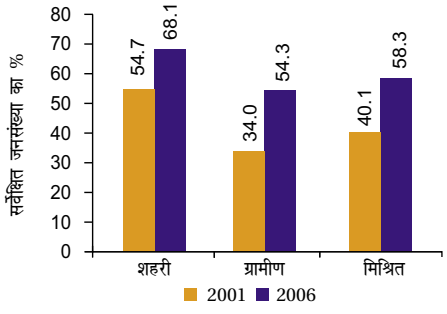

महिला यौन कर्मियों के बीच में जागरूकता और कंडोम का प्रयोग (बीएसएस 2001 और 2006)

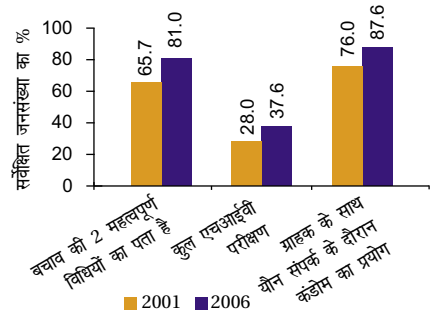

देखरेख, समर्थन और उपचार

एआरटी केंद्रों और एआरटी लेने वाले लोगों की संख्या

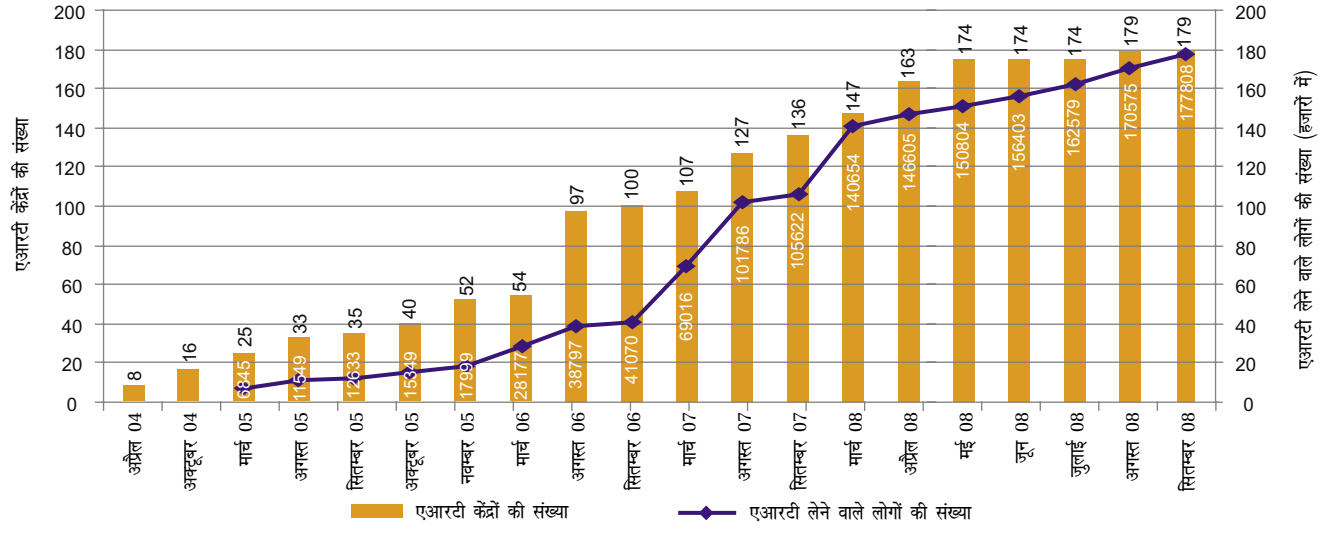

लक्ष्यबद्ध हस्तक्षेप

लक्ष्यगत हस्तक्षेप अक्टूबर 2008

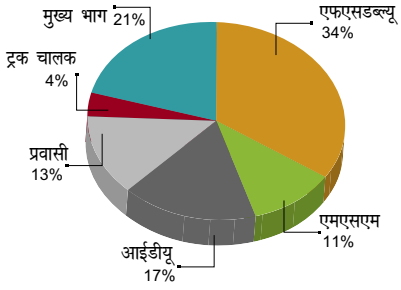

उच्च जोखिम वाले समूहों का वर्तमान कवरेज, अक्टूबर 2008

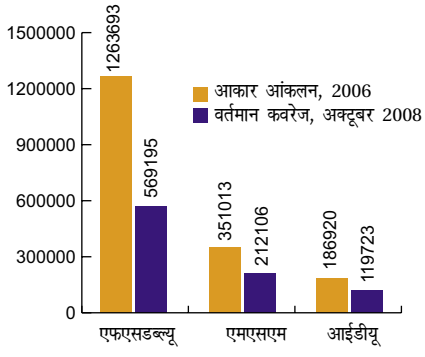

एआरटी लेने वाले बच्चों की संख्या

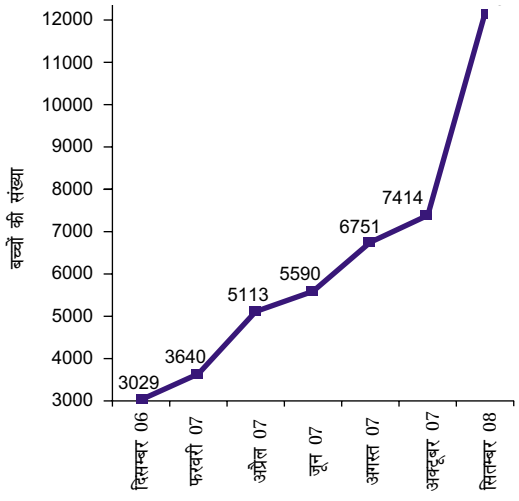

एआरटी का विस्तार: समय की जरूरत

स्वैच्छिक परामर्श और जांच के लिए आगे आने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है। चिकित्सा अधिकारियों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण से संक्रमित लोगों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिली है। एआरटी सेवाओं में तेजी ला कर उपचार पद्धति का पालन करने पर बल दिया गया है। पीपीटीसीटी कार्यक्रम वर्ष 2012 तक बच्चों में संक्रमण कम करने का प्रयास कर रहा है।

एचआईवी रोकथाम सेवाएं

भारत में एकीकृत परामर्श एवं जांच सेवाओं की प्रगति 2001-2008
(तिथिपत्र वर्ष)

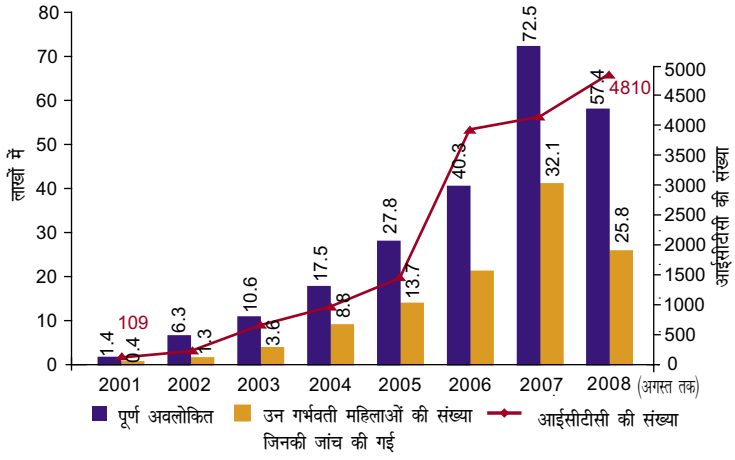

भारत में एसटीआई सेवाओं की सितंबर 2008 तक की वर्षवार प्रगति
(तिथिपत्र वर्ष)

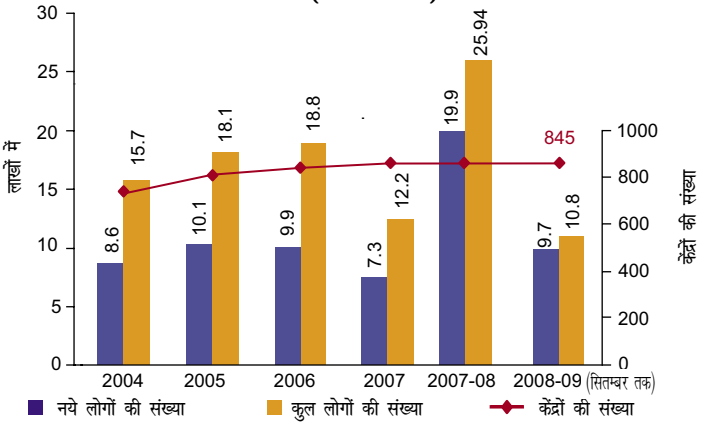

रक्त सुरक्षा

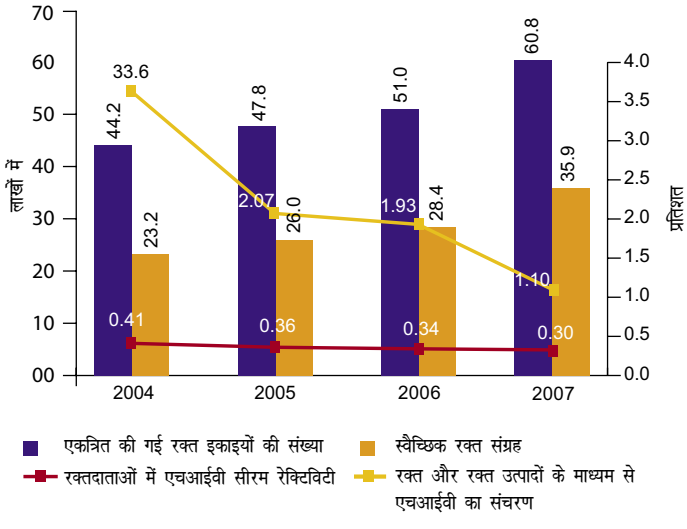

रेड रिबन एक्सप्रैस अपने मिशन पर

रेड रिबन एक्सप्रैस (आरआरई) विश्व का सबसे बड़ा जन लामबंदी अभियान है। दिसंबर 1, 2007 को विश्व एड्स दिवस पर आरंभ हुई आरआरई अपनी एक वर्ष की यात्रा के दौरान 180 स्टेशनों पर पड़ाव डालते और कुल 27,000 किमी की दूरी तय करते हुए 24 राज्यों से होकर गुजरी। आरआरई पर विशेष लेख में हम इस यात्रा का अब तक का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

1 दिसम्बर, 2007 से 1 दिसम्बर, 2008 तक आरआरई की एक वर्ष की लंबी यात्रा के दौरान किये गये जन-संपर्क कार्य

आरआरई के माध्यम से प्रशिक्षित लोग

- 68,244 संसाधन व्यक्तियों को रेलगाड़ी के प्रशिक्षण कक्ष में प्रशिक्षण दिया गया।

उन लोगों की कुल संख्या जिनसे संपर्क किया गया

- 62 लाख लोगों से ट्रेन और बस एवं साइकल दस्तों के कार्यकलापों के माध्यम से संपर्क किया गया।

उन लोगों की संख्या जिन्हें परामर्श दिया गया

- 1,16,183 लोगों को परामर्श दिया गया, जिनमें 22 प्रतिशत महिलाएं थीं।

अपारंपरिक कंडोम वितरण केंद्र

- अभियान के दौरान 1,300 अपारंपरिक कंडोम वितरण केंद्र स्थापित किये गये।

कंडोम वितरण

- रेलगाड़ी और बस काफिले के माध्यम से 10 लाख से अधिक कंडोम वितरित किये गये।

केरल के विज्ञापन अभियान को मिला अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार

केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के लिए विज्ञापन अभियान चलाने वाली संस्था स्टार्क कम्यूनिकेशंस, ग्लोबल सर्टीफिकेट अवार्ड से सम्मानित

केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के 'एड्स की वैक्सीन है प्यार' शीर्षक विज्ञापन अभियान को प्रतिष्ठित भूमंडलीय स्वास्थ्य देखरेख अवार्ड के अंतिम विजेताओं में से एक चुना गया। केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा चुनी गई तिरुवनंतपुरम की विज्ञापन संस्था, स्टार्क कम्यूनिकेशंस भारत से छह अंतिम सर्टिफिकेट विजेताओं में से एक और दक्षिण भारत की एकमात्र एजेंसी थी।

ये भूमंडलीय पुरस्कार पिछले 14 वर्षों से स्वास्थ्य देखरेख संचार में रचनात्मक और मार्केटिंग उत्कृष्टता के उद्योग मानक निर्धारित करते रहे हैं। विजेताओं का चयन 30 देशों की 300 एजेंसियों और संस्थाओं

द्वारा जमा की गई 5,000 प्रविष्टियों में से किया गया। उनका मूल्यांकन स्वास्थ्य देखरेख विशेषज्ञों और अग्रणी एजेंसियों के रचनात्मक निदेशकों के एक अंतर्राष्ट्रीय पैनल द्वारा किया गया।

इस अभियान को स्टार्क के रचनात्मक निदेशक, बी.आर. स्वरूप ने कला निदेशक ए.वी. मधु के साथ मिल कर लिखा और तैयार किया था। उनके द्वारा तैयार विज्ञापन के आधार पर केरल राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने केरल फिल्म उद्योग की अग्रणी हस्ती, पद्म श्री मोहन लाल को सद्भावना दूत बनाते हुए एचआईवी रोकथाम अभियान चलाया।

नया म्यूजिक वीडीओ रिलीज किया गया

लोकप्रिय युवा सितारे, गायक शान ने एचआईवी और एड्स के विषय पर तैयार किये गये गीत "यहां कुछ सपने रहते हैं" को अपनी आवाज दी, जिसे विश्व एड्स दिवस पर रिलीज किया गया। युवाओं को ध्यान में रख कर तैयार किया गया यह म्यूजिक वीडीओ, हल्के, मगर जिन्दादिल तरीके से युवाओं का आह्वान करता है कि वे उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार का परिचय दें। इसे जॉन्स हापकिन्स विश्वविद्यालय के संचार कार्यक्रम केंद्र द्वारा नाको के सहयोग से तैयार किया गया है। इस गीत को गुलज़ार ने लिखा और शांतनु मोइत्रा ने संगीत दिया है।

हमजोली शिक्षकों के लिए आईईसी टूलकिट

ग्लोबल फंड टु फाइट अगेंस्ट एड्स, ट्यूबरक्लोसिस एंड मलेरिया (जीएफएटीएम) की सहायता से पापुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया, 24 राज्यों में एचआईवी के साथ जीने वाले लोगों के लिए एक देखरेख और सहायता कार्यक्रम का क्रियान्वयन कर रहा है। इस प्रकार इसने एक आईईसी टूलकिट तैयार किया है जिसमें दो फ्लिप बुक्स, चार लीफलेट्स और एक डायरी शामिल है। यह टूलकिट छह भाषाओं – अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगू और कन्नड़ – में उपलब्ध है। यह उन हमजोली शिक्षकों के लिए है जो रोकथाम, देखरेख एवं सहायता तथा उपचार के बारे में जानकारी प्रदान करने का कार्य करते हैं। इस टूलकिट का उपयोग करके हमजोली शिक्षक अपने हमजोलियों और अन्य लोगों को यह जानकारी दे सकेंगे कि एचआईवी संबंधी अपनी समझ को बढ़ा कर स्वस्थ और पूर्ण जीवन कैसे जीना है।

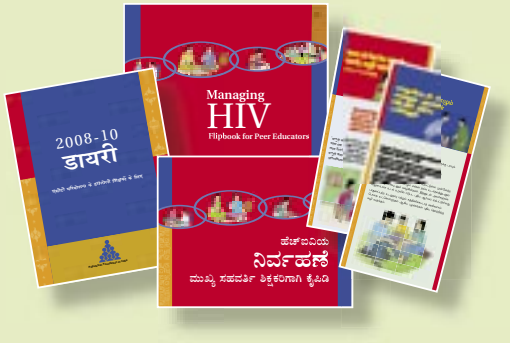

रेड रिबन एक्सप्रैस पर लघु वृत्तचित्र

रेड रिबन एक्सप्रैस की एक वर्ष लंबी यात्रा को लेकर एक लघु वृत्तचित्र तैयार किया गया है जिसे विश्व एड्स दिवस पर रिलीज किया और दर्शाया गया। भारतीय नगरों और कस्बों की अनूठी झांकी को दर्शाने वाली यह फिल्म आशा, निराशा, खुशी और उदासी की मिलीजुली तस्वीर प्रस्तुत करती है। देश के अलग–अलग कोनों में रहने वाले लोगों की आवाज में, अलग–अलग भाषाओं में बोलने वाली यह फिल्म दर्शकों को देश में एचआईवी की महामारी की वर्तमान स्थिति के अनुभव से अवगत कराती है।

उत्तराखंड राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा हिंदी में त्रैमासिक पत्रिका का आरंभ

एचआईवी के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली उत्तराखंड राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी की पत्रिका "संचेतना" का प्रकाशन उत्तराखंड राज्य सरकार की सहायता से किया जा रहा है। इसमें एचआईवी के सभी पहलुओं से जुड़ी कहानियां, केस स्टडीज और ताजा समाचार शामिल होंगे। यह एचआईवी–संक्रमण, एचआईवी की रोकथाम और उपचार पर जानकारी प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करेगी। रुचिकर कहानियों के माध्यम से यह एचआईवी से संक्रमित और प्रभावित लोगों पर मौजूद मिथ्या धारणाओं और भ्रमों के प्रभाव से राज्य में मौजूद उदाहरण प्रस्तुत करेगी। पत्रिका के हिंदी संस्करण का पहला अंक (जुलाई–सितंबर 2008) प्रकाशित हो चुका है।

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए द्विभाषी प्रशिक्षण मैनुअल

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सहयोग से नाको ने "शेपिंग अवर लाइव्सः लर्निंग टु लिव सेफ एंड हैल्दी" पुस्तिका तैयार की है। इसे यूएनडीपी और यूनिफेम की सहायता से तैयार किया गया है। यह संसाधन सामग्री एएनएम, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा और स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के लिए है। इस पुस्तिका में एचआईवी और एड्स पर जानकारी के अलावा महिलाओं के जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही यह स्वास्थ्य, कलंक, भेदभाव, निर्धनता और सशक्तीकरण के मुद्दों पर व्यापक समझ प्रदान करती है। पुस्तिका हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध है और इसका अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है।

सकारात्मक रूप से जियें, साहस के साथ जियें!

जब बिहार के दरभंगा जिले का 25–वर्षीय साहिल खून चढ़ाने की वजह से एचआईवी से संक्रमित होने की बात करता है तो उसमें जरा भी कटुता नहीं झलकती। नये शहर में अपनी नई पहचान बनाते हुए, उसे स्वयं जीने और अपने जैसे लोगों को जीने की प्रेरणा देने का प्रोत्साहन मिला। उसे भी कलंक और भेदभाव का सामना करना पड़ा था, पर उसे आशा है कि लोग एचआईवी संक्रमण को बेहतर ढंग से समझेंगे और एचआईवी पॉजिटिव लोगों को स्वीकार कर अपनायेंगे। उसे यकीन है कि एचआईवी को लेकर और बातचीत करने की जरूरत है; क्योंकि जब आप एचआईवी को देखेंगे तभी सामान्य होंगे। उनके साथ हुई भेंटवार्ता के अंश:

प्र. आप एचआईवी से कैसे संक्रमित हुए?

उ. सिर्फ 13 वर्ष की उम्र में सड़क दुर्घटना में घायल होने के बाद मुम्बई के केईएम अस्पताल में मुझे खून चढ़ाया गया था। उसी से मुझे एचआईवी हुआ। इस दुर्घटना के बाद मेरा परिवार मुझे गांव ले गया। पर दो महीने बाद ही मुझे बुखार रहने लगा। कमजोरी के साथ–साथ वजन भी घटने लगा। 44 किलो से घटकर मेरा वजन 24 किलो रह गया। मेरी इस रहस्यमय बीमारी की वजह जानने के लिए मेरी मां कहां–कहां नहीं दौड़ी। उसने अपनी पैतृक जमीन तक बेच दी और मेरे इलाज पर ढेर सारा पैसा खर्च कर डाला।

प्र. आपको एचआईवी है, यह कैसे पता चला?

उ. जब मेरी मां मुझे जिला अस्पताल ले गई तो डाक्टर ने खून की जांच के बाद यह बताया कि मुझे एचआईवी है। उसने मां को और मां ने परिवार को यह जानकारी दी। उस समय एचआईवी और एड्स के बारे में लोगों को खास जानकारी नहीं थी। वे बस यह जानते थे कि यह यौन संपर्क से होने वाला एक घातक छूत का रोग है।

प्र. क्या आपको परिवार और गांव वालों की ओर से भेदभाव का सामना करना पड़ा?

उ. जैसे ही गांव वालों को पता चला कि मुझे एचआईवी है, उन्होंने सामाजिक अछूत की तरह मेरा बहिष्कार कर दिया। उनका मानना था कि यह बीमारी न केवल मुझे मार डालेगी, बल्कि मेरे नजदीक आने वाले किसी भी व्यक्ति की जान ले सकती है। उन्होंने सामूहिक रूप से मुझे तत्काल बाहर निकालने का फैसला किया। किंतु पंचायत ने कुछ सहानुभूतिपूर्ण रुख दर्शाया क्योंकि पंचायत सदस्य जानते थे कि मेरे पास न कोई जगह है और न साधन है कि मैं बाहर जा कर कहीं रह सकूं। काफी विचार–विमर्श के बाद, उन्होंने मुझसे गांव के बाहर खुले खेत में एक झोंपड़ी में रहने को कहा। मेरा संपर्क केवल मेरी मां से रहता था, जो मेरे लिए खाना लाती थी और उसे मुझसे कुछ दूरी पर रख कर चली जाती थी।

एक परामर्शदाता ने तब मेरी मिथ्या धारणाओं को दूर किया जब उसने बताया कि मैं मरने नहीं जा रहा हूं। उसने मेरे साथ बैठकर भोजन किया और पहनने के लिए मुझे साफ कपड़े दिये।

प्र. आपकी स्थिति में बदलाव कब आया?

उ. गांव के एक सम्माननीय शिक्षक ने मुझे 2,000 रुपए दिये और दिल्ली जाकर किसी सरकारी अस्पताल में अपना उपचार कराने को कहा। जब मैं रेलगाड़ी से नीचे उतरा तो मुझे एचआईवी के विज्ञापन वाला एक बोर्ड दिखा जिस पर एक नगरपालिका अस्पताल का फोन नम्बर लिखा था। यहीं से शुरू हुई आशा और विश्वास निर्माण की मेरी यात्रा। एक परामर्शदाता ने तब मेरी मिथ्या धारणाओं को दूर किया जब उसने बताया कि मैं मरने नहीं जा रहा हूं। उसने मेरे साथ बैठकर भोजन किया और पहनने के लिए मुझे साफ कपड़े भी दिये। उस समय सीडी–4 काउंट की जांच केवल प्राइवेट अस्पतालों में की जाती थी। उसने जांच कराने के लिए मुझे पैसे भी दिये।

प्र. आपने अपना गुजारा कैसे चलाया?

उ. मुझे एक अन्य एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति से सहायता प्राप्त हुई जो मुझे अपने घर ले गया जहां मैं छह महीने रहा। धीरे–धीरे मैंने अपना छोटा व्यवसाय शुरू किया। मैं थोक बाजार से कमीजें खरीदता और उन्हें रेहड़ी में रख कर घूम–घूम कर बेचता था। सुबह मैं राम मनोहर लोहिया अस्पताल जा कर खुशी–खुशी अन्य पॉजिटिव लोगों को परामर्श देता था और उन्हें बताता था कि एचआईवी से संक्रमित होने का मतलब जीवन का अंत नहीं है। यहां दिल्ली राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी और एचआईवी–पॉजिटिव लोगों के नेटवर्कों ने मेरा चयन कर मुझे एक प्रभावकारी क्षेत्र कार्यकर्ता बनने का मंच प्रदान किया। धीरे–धीरे मुझमें आशा का संचार होने लगा था।

प्र. अब आप कैसे हैं?

उ. दस वर्ष बीत चुके हैं। पिछले वर्ष मुझे हड्डी की टीबी हुई थी जिसकी वजह से शरीर का निचला हिस्सा बेकार हो गया था, पर अब मैं स्वस्थ हो रहा हूं। अर्शिया देखरेख केंद्र ने मुझे दिल्ली के स्पाइनल इंजरी सेंटर भेजा। उन्होंने मुझे भर्ती कर लिया और मेरे तीन आपरेशन मुफ्त किये। अस्पताल ने मेरे इलाज पर आया 5 लाख रुपए का खर्च माफ कर दिया। फिर भी मैं दूसरी पंक्ति का डाट्स उपचार प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा हूं। 18 महीने के इस इलाज पर 10–12 हजार रुपए का खर्च आएगा। एक्शन एड्स से परामर्शदाता के रूप में मुझे जो 8,000 रु. की फैलोशिप प्राप्त होती है वह मेरे इलाज पर खर्च हो जाती है, फिर भी मैं दवा की कुछ खुराकें नहीं ले पाता जिससे इलाज लंबा खिंच रहा है। मैं अपने भोजन और खुराक पर ध्यान देने की कोशिश करता हूं, पर सबसे महत्वपूर्ण यह है कि मैं सिर ऊंचा करके रहता हूं और अपने प्रसन्नतापूर्ण व्यवहार को बनाये रखता हूं।

प्र. आपके विचार से क्या एचआईवी पॉजिटिव लोगों को पर्याप्त सहायता मिलती है?

उ. अपने हस्तक्षेप के माध्यम से नाको हमें सहायता प्रदान करता है, मुफ्त उपचार के लिए अस्पतालों और देखरेख एवं सहायता गृहों से हमारा संपर्क कराता है; पर जब टीबी, आदि जैसे अवसरवादी संक्रमण होते हैं – जैसा कि मेरे मामले में हुआ – तब पैसे की कमी होने लगती है।

प्र. एक मध्यवर्गीय कॉलोनी में रहते हुए क्या आपको लांछन और भेदभाव का सामना करना पड़ता है?

उ. पिछले कुछ वर्षों से संचार माध्यमों द्वारा इस मुद्दे को उजागर किये जाने की वजह से स्वीकार्यता बढ़ रही है। मैं एक दंपत्ति के साथ एक पेइंग गेस्ट के रूप में रहता हूं, पर वे पैसा नहीं लेते। वे मेरी एचआईवी–पॉजिटिव स्थिति से अवगत हैं और मेरे प्रति अत्यंत दयालु हैं। मेरे पड़ोसी जानते हैं कि मैं एचआईवी और एड्स के क्षेत्र में काम करता हूं, पर यह नहीं जानते

संचार माध्यमों द्वारा इस मुद्दे को उजागर किये जाने की वजह से स्वीकार्यता बढ़ रही है। मैं एक दंपत्ति के साथ एक पेइंग गेस्ट के रूप में रहता हूं, पर वे पैसा नहीं लेते। वे मेरी एचआईवी–पॉजिटिव स्थिति से अवगत हैं और मेरे प्रति अत्यंत दयालु हैं। जानकारी के अभाव में ही लोग भ्रम पाल लेते हैं।

कि मैं संक्रमित हूं। मुझे लगता है कि अगर उन्हें पता भी चल जाए तो वे मेरा बहिष्कार नहीं करेंगे। जानकारी के अभाव में ही लोग भ्रम पाल लेते हैं। गांवों में – जहां अंधविश्वास गहरी जड़ें जमाए हैं – स्थिति कठिन है और लोग एचआईवी पॉजिटिव लोगों को अस्वीकार करते हैं। जैसे कि मेरे गांव के लोग यह समझते हैं कि लोगों की टीबी से मौत हो रही है, जबकि वास्तविकता में एचआईवी उसकी रोग प्रतिरक्षा प्रणाली को नष्ट करता है।

प्र. सहायता समूह क्या भूमिका निभाते हैं?

उ. निर्धनता और अस्वीकार्य सामाजिक शक्तियां मेरे जैसे लोगों को सहायता समूह की शरण में ले जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए विभिन्न राज्यों में एचआईवी पॉजिटिव लोगों के नेटवर्क बनाये गये हैं। मेरी कहानी भी उन्हीं लोगों जैसी है जो संक्रमित हैं, निर्धन हैं और एक–एक करके अपने दिन जीते हैं। सीमित साधनों और ज्ञान तक सीमित पहुंच वाले व्यक्ति के लिए ऐसा सहायता समूह ढूंढना वरदान की तरह है, जो उसकी दुर्दशा को समझ सके और सहायता प्रदान करने वाली किसी संस्था के पास भेज सके। मैं खुशकिस्मत हूं कि मुझे हर कदम पर सहायता प्राप्त हुई।

मैंने 350 पॉजिटिव लोगों को मिला कर अपनी एक गैर-सरकारी संस्था पंजीकृत की है। इनमें से अधिकतर बच्चे हैं जिन्हें मैं भोजन और पोषण प्रदान करना चाहता हूं। जब मैं उन बच्चों को देखता हूं जो अपनी गलती के बगैर संक्रमित होते हैं तो मेरा अपना दर्द और वेदना कम जो जाती है। मैं इन बच्चों को बेहतर जीवन देना चाहता हूं।

प्र. आपके विचार से क्या एचआईवी पॉजिटिव व्यक्ति के प्रति लोगों के रवैये में बदलाव आ रहा है?

उ. शिक्षा और जागरूकता निश्चय ही लोगों को तथ्यों से अवगत कराते हैं, पर व्यवहार में बदलाव एक धीमी प्रक्रिया है। मुझे याद है, जब मैं अपने गांव गया था, इस आशा से कि मेरा परिवार मुझे जीवित और स्वस्थ देखकर खुश होगा। आखिरकार मैंने गांव के स्थानीय डॉक्टरों की भविष्यवाणी को गलत सिद्ध कर दिया था। पर मुझे यह देखकर गहरा दुःख हुआ कि लोग मुझसे दूरी (शारीरिक) बनाये रखते थे। मेरी मां ने भी मुझे उन अलग से रखे बर्तनों में भोजन दिया, जिन बर्तनों का उपयोग मैं गांव के बाहर बनी झोंपड़ी में किया करता था। मैं बिना भोजन किये वापस लौट आया और तब से वापस नहीं गया हूं।

प्र. आगे आप क्या आशा करते हैं?

उ. मैंने 350 पॉजिटिव लोगों को मिला कर अपनी एक गैर–सरकारी संस्था पंजीकृत की है। इनमें से अधिकतर बच्चे हैं, जिन्हें मैं भोजन और पोषण प्रदान करना चाहता हूं। मैं 2007 से एआरटी ले रहा हूं और अब मैंने सावधानीपूर्वक दूसरी पंक्ति के एआरटी उपचार पर नजर रखी है, जो इस माह कुछ समय पहले चुने हुए एआरटी केंद्रों में शुरू हुआ है। मुझे आशा है कि यह उपचार सभी सरकारी अस्पतालों में मुफ्त उपलब्ध हो सकेगा, ताकि मैं अधिक समय तक जीवित रह सकूं। जब मैं उन बच्चों को देखता हूं जो अपनी गलती के बगैर संक्रमित होते हैं तो मेरा अपना दर्द और वेदना कम जो जाती है। मैं इन बच्चों को बेहतर जीवन देना चाहता हूं।

प्र. आप अभी युवा हैं। क्या आपकी विवाह करने या जीवन साथी ढूंढने की कोई योजना है?

उ. (शर्माते हुए) कुछ प्रस्ताव तो आए हैं। किसी का साथ रहना महत्वपूर्ण है। मैं उन पर विचार करूंगा, पर पहले पूरी तरह ठीक हो जाऊं और इन बैसाखियों से छुटकारा पा लूं।

मैसूर में हमजोली (पीयर) सम्मेलन ने हमजोली शिक्षकों के क्षमता निर्माण पर विचार किया

सम्मेलन ने हमजोलियों को समूह शिक्षण प्रक्रियाओं में संलग्न कर सामूहिकीकरण के निर्माण में मदद की

केएसएपीएस द्वारा आयोजित पीयर सम्मेलन

मुख्य आबादी के बीच स्वामित्व निर्माण प्रक्रियाओं के नेतृत्व हेतु समुदाय के सदस्यों के बीच संपर्क विकसित करने के लिए र्नाटक राज्य एड्स प्रिवेंशन सोसाइटी (केएसएपीएस) ने एक राज्य–स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया। इसका उद्देश्य हमजोलियों को स्वाग्रही और उत्तरदायी कार्रवाई में संलग्न करके क्षेत्र कार्यकलापों में मजबूती लाना; कार्य के सर्वोत्तम तौर–तरीकों, चुनौतियों और अवसरों के बारे में सीखना; और राज्य में एचआईवी रोकथाम प्रयासों में सहायता करने के लिए हमजोलियों की क्षमता और आत्मविश्वास को सुदृढ़ बनाना था। हर जिले से महिला यौनकर्मी, समलैंगिक पुरुष और किन्नर समुदाय के बीच से 224 हमजोलियों, 24 ओआरडब्ल्यू और समुदाय आधारित संगठनों के सदस्यों का चयन किया गया।

एनएसीपी–III में चक्रीय आधार पर हमजोलियों की नियुक्ति और हमजोली नेतृत्व वाले क्षेत्र कार्यकलापों की अवधारणा हस्तक्षेप का नेतृत्व करने हेतु समुदायों का सशक्तीकरण करना महत्वपूर्ण है। 300 यौनकर्मियों और यौन अल्पसंख्यक वर्गों के सदस्यों को आश्वासन दिया गया कि उनके साथ किये जाने वाले भेदभाव और उनके व्यावसायिक जोखिमों में कमी लाने का प्रयास किया जाएगा। समुदाय आधारित संगठनों के फैसिलिटेटरों ने बुनियादी सेवाओं तक पहुंच, लांछन और भेदभाव, लामबंदी और संकट–प्रबंधन पर सत्रों का संचालन किया।

मैसूर के पुलिस आयुक्त ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम एचआईवी को केवल स्वास्थ्य समस्या नहीं, बल्कि एक सामाजिक मुद्दा मान कर चलें। उनके अनुसार, सीमांतीकृत समुदाय को मुख्यधारा में लाना एक अच्छा कदम है। 16 से 20 वर्ष के युवाओं के लिए जीवन कौशल शिक्षा को अनिवार्य बनाने का सुझाव दिया गया। कर्नाटक में, इस क्षेत्र में लगभग 26 गैर–सरकारी संस्थाएं कार्य कर रही हैं। सम्मेलन में इस संबंध में रणनीतियों की रूपरेखा तैयार की गई कि समुदाय के नेतृत्व वाली पहलकदमियों के माध्यम से यौन कर्मियों और यौन अल्पसंख्यकों की क्षमताओं का निर्माण कैसे करना है। इन सीमांतीकृत समुदायों ने केएसएपीएस और कर्नाटक हैल्थ प्रमोशन ट्रस्ट (केएचपीटी) के अंतर्गत समुदाय–आधारित संगठनों का गठन किया है। उन्हें अपने वर्तमान कार्यक्रमों के लिए पूर्ण सहायता प्राप्त होगी।

■ कर्नाटक राज्य एड्स प्रिवेंशन सोसाइटी के योगदान से

आकाशवाणी पर एचआईवी की रोकथाम पर संदेश

स्वास्थ्य एवं एचआईवी संबंधी मुद्दों पर जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से केएसएपीएस ने दूरदर्शन, रेडियो, मुद्रण और लोक माध्यमों का उपयोग कर अनेक कार्यक्रम तैयार किये। इससे लोगों तक एचआईवी की रोकथाम का संदेश पहुंचाने में मदद मिली। केएसएपीएस ने हाल में, इस उद्देश्य के लिए रेडियो का उपयोग करना आरंभ किया है। एक सितंबर, 2008 से मार्च 2009 तक आकाशवाणी पर 'जीवना जोपाना' शीर्षक नया कार्यक्रम प्रसारित किया जाएगा।

एचआईवी से संक्रमित और प्रभावित लोगों में अधिकतर युवा और महिलाएं शामिल हैं। नवजात शिशुओं तक को एचआईवी संक्रमण का खतरा होता है। इस तरह रेडियो के माध्यम से इन लोगों तक रोकथाम का संदेश पहुंचाने की संभावनाओं की छानबीन की गई; और इस तरह 'जीवना जोपाना' कार्यक्रम का जन्म हुआ।

युवाओं और महिलाओं के लिए विशिष्ट और सुनियोजित कार्यक्रम तैयार किया गया है। इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये कार्यक्रम महिलाओं और युवाओं को लाभ पहुंचा सकें, हर किसी का सहयोग करने हेतु आह्वान किया गया है।

अरूणाचल प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने अपनी वेबसाइट आरंभ की

इससे जानकारी को जिला स्तर, और विशेषकर दूर-दराज के अगम्य क्षेत्रों में पहुंचाने में मदद मिली है

अरुणाचल प्रदेश राज्य में एक लंबा एडवोकेसी अभियान चलाया गया जिसे उन दूर–दराज के और सबसे असुरक्षित क्षेत्रों में पहुंचाया गया जहां एचआईवी की व्याप्तता उच्च है, और इस संबंध में जागरूकता काफी कम है कि यह संक्रमण कैसे फैलता है और किस प्रकार का उपचार उपलब्ध है। राज्य में विशिष्ट आयु समूहों और सरोकारों को लक्ष्य बनाते हुए विभिन्न कार्यक्रम चलाये गये।

इटानगर में 3,000 वालंटियरों की एक रैली, सचल नाटक, आईईसी प्रदर्शनियों और रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया। पहियों पर कंडोम स्टाल का उद्घाटन एक विशेष आकर्षण रहा। राज्य के माननीय स्वास्थ्य मंत्री, सी.सी. सिंगपो ने यह बताते हुए कि एचआईवी की रोकथाम की जा सकती है, इस संक्रमण पर फौरन ध्यान देने की जरूरत पर बल दिया। साथ ही उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि संक्रमित व्यक्ति समुदाय की सहायता से दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन जी सकता है।

आडियो–विजुअल स्पॉट्स, फोन–इन कार्यक्रमों, पैनल विचार–विमर्शों और पत्र–पत्रिकाओं में विज्ञापनों के साथ 15 नवम्बर, 2008 तक एक माह लंबा बहु–संचार माध्यम अभियान चलाया गया जिससे जागरूकता पैदा हुई और इस विषय पर स्वस्थ संवाद के अवसर पैदा हुए।

अरुणाचल प्रदेश की राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी की वेबसाइट www.apsacs.org इस अर्थ में महत्वपूर्ण है कि अब राज्य के सभी हिस्सों के लोग कंप्यूटर के माध्यम से जानकारी और सेवाएं उपलब्ध कर सकते हैं।

विश्व एड्स दिवस के अवसर पर जिले में लोगों के सरोकारों से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किये गये। पश्चिमी कामेंग जिले के भालुकपोंग में शिक्षा विभाग ने 200 छात्रों की दौड़ आयोजित कराई। इस अवसर पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय विधायकों, नागरिक प्रशासन, चिकित्सा समुदाय और छात्रों ने भाग लिया। प्रदेश के एक दूरस्थ और दुर्गम जिले, कोलोरियांग में छात्रों और आम लोगों की एक कैंपस रैली निकाली गई। बुजुर्ग लोगों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और सेवाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए युवाओं को एकीकृत परामर्श एवं जांच केंद्र (आईसीटीसी) ले जाया गया।

पहियों पर कंडोम स्टाल का उद्घाटन

खोनसा में छात्रों के बीच स्वस्थ विचार–विमर्श आयोजित किये गये। आलो में इस दिन रैली और प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पूर्वी सियांग जिले में एक स्थानीय युवा उत्सव की साइट पर स्वैच्छिक परामर्श एवं जांच आयोजित की गई।

यिंगकिओंग के टेजू में एक जन रैली निकाली गई। यह क्षेत्र एचआईवी व्याप्ति की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है। आईसीटीसी/पीपीटीसीटीसी के प्रभारी ने युवाओं से आग्रह किया कि वे जिला अस्पताल में लगी कंडोम विक्रय मशीन का उपयोग करें। चिकित्सा अधीक्षक ने एक चौंकाने वाला तथ्य बताया कि यहां एचआईवी के 28 मामलों का पता लगाया जा चुका है और यह जिला "ए" वर्ग के अंतर्गत आता है। आशा है कि इन कार्यकलापों को वर्ष 2009 के दौरान जारी रखने से संक्रमण में कमी आएगी तथा संक्रमित एवं प्रभावित लोगों को उपचार एवं सेवाएं प्राप्त हो सकेंगी।

गुवाहाटी में स्वैच्छिक जांच में तेजी आई

मुख्य मंत्री ने पांच नये संपर्क एआरटी केंद्र और नया समुदाय देखरेख केंद्र खोलने की घोषणा की

राज्य में विश्व एड्स दिवस के आयोजन के दौरान स्वैच्छिक जांच और परामर्श में तेजी लाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। माननीय मुख्य मंत्री ने एचआईवी संक्रमित लोगों के लिए एक नई स्कीम की घोषणा की जो उन्हें महंगाई भत्ता प्राप्त करने का हकदार बनायेगी और वे प्रयोगशाला जांच और दवाएं प्राप्त करने से संबंधित यात्रा व्यय का दावा कर सकेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि वर्ष 2009 में डिब्रूगढ़ में एक नया समुदाय देखरेख केंद्र और गोलाघाट, सोनितपुर, नागांव, बोंगियागांव सिविल अस्पताल में और सीआरपीएफ बेस अस्पताल में पांच एआरटी केंद्र खोले जाएंगे।

एचआईवी और एड्स संबंधी जागरूकता पर एक नाटक का दृश्य

विश्व एड्स दिवस पर वालंटियरों, गैर–सरकारी संस्थाओं और सरकारी अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी से रंगारंग रैलियां और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिला प्रशासनों ने स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाये। सरकारी विभाग जैसे नार्थ फ्रंटियर रेलवे, तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम, नागरिक सुरक्षा विभाग, पंचायतों और मजदूर यूनियन ने जागरूकता, जांच, उपचार और लांछन से संबंधित संदेशों को दोहराते हुए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये। गैर–सरकारी संस्थाओं ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं और नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से युवाओं और समुदाय संगठनों पर ध्यान केंद्रित किया।

असम राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने कामरूप जिले में 10 नुक्कड़ नाटक आयोजित किये। दूरदर्शन और आकाशवाणी के 'लाइव फोन इन' कार्यक्रमों से युवाओं के साथ जुड़ने में मदद मिली। एफएम प्रसारण केंद्रों ने इस दिन का विषय एचआईवी और एड्स को बनाया। उनके द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों में संक्रमण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। इसके अलावा समाचार पत्रों में विज्ञापन जारी किये गये और वाहनों से घोषणा कर संदेश प्रसारित किये गये।

विश्व एड्स दिवस के केंद्र में थे प्रवासी, ट्रक चालक और असुरक्षित समूह

विशेष अभियान – "नेतृत्व करो, सशक्त बनाओ और पहुंचाओ" ने लोगों में गहरी दिलचस्पी जगाई

उत्तर प्रदेश में उच्च जोखिम वाले समूहों की व्यापक उपस्थिति है। इसकी 17 करोड़ की आबादी का 50 प्रतिशत प्रजनन आयु समूह में है। यहां एक करोड़ प्रवासी रहते हैं तथा 52,741 ट्रक चालक आठ राष्ट्रीय राज मार्गों तथा भारत–नेपाल की सरहद के साथ–साथ ट्रक चलाते हैं। निम्न साक्षरता दर (ग्रामीण – 36.66 प्रतिशत, राज्य – 57.2 प्रतिशत) के चलते एचआईवी और एड्स से संघर्ष करने की चुनौती यहां काफी विकट है।

दिसंबर 2008 के दौरान इन समुदायों और समूहों तक पहुंचने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यकलाप आयोजित किये गये। राज्य की 17 डिवीजनों में एआरटी, पीपीटीसीटी, आईसीटीसी, देखरेख और सहायता, आईईसी और परामर्श से संबंधित विशेष जानकारी और सेवाएं प्रदान की गईं। इन डिवीजनों के अंतर्गत लगभग 70 जिले, 303 तहसीलें, 813 समुदाय विकास प्रखंड और 52,028 ग्राम पंचायतें शामिल हैं।

यहां "नेतृत्व करो, सशक्त बनाओ और पहुंचाओ" नामक 10–दिवसीय जागरूकता निर्माण अभियान चलाया गया। एक जन संचार अभियान चलाया गया जिसके अंतर्गत जिलों में एक विशेष आईईसी मोबाइल वाहन द्वारा प्रचार किया गया। नवम्बर के अंतिम सप्ताह में होर्डिंग, बैनर, रोड शो और नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से अभियान चलाया गया। रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता, बैडमिंटन प्रतियोगिता, पेंटिंग/स्लोगन प्रतियोगिता और विज्ञापनों के माध्यम से युवाओं तक पहुंच बनाई गई। समापन समारोह के अवसर पर आयोजित कैंडल 'लाइट विजिल' और मैराथन दौड़ में आम लोगों ने भारी संख्या में भाग लिया और अपनी एकजुटता दर्शाई। लखनऊ के फन रिपब्लिक माल में एक कंडोम वेंडिंग मशीन (सीवीएम) लगाई गई जो काफी चर्चा और दिलचस्पी का विषय रही। हिंदुस्तान लैटेक्स ने घोषणा की कि आगामी महीनों में सार्वजनिक स्थानों में 600 और ऐसी मशीने लगाई जाएंगी।

चंडीगढ़ एड्स नियंत्रण सोसाइटी के प्रयासों से एचआईवी पॉजिटिव लोगों के रोजगार अवसरों में वृद्धि

पीएलएचए को सिलाई की मशीनें भेंट की गईं। एचआईवी के नये मामलों से निपटने के लिए अस्पतालों में प्रशिक्षण का नया दौर

चंडीगढ़ नेटवर्क के एचआईवी पॉजिटिव सदस्यों को धागों और कपड़ों के साथ सिलाई मशीनें भी दी गई। इसका उद्देश्य उन्हें आत्म–निर्भर बनाना और उनकी सामाजिक सुरक्षा एवं स्व–रोजगार क्षमता को बढ़ाना था। सद्भावना दर्शाते हुए उन्हें आकर्षक डिनर सेट भी भेंट किये गये।

बागों के इस शहर में अधिकाधिक लोग अपनी एचआईवी स्थिति जानने के लिए आगे आ रहे हैं। अतः यह महसूस किया गया कि डाक्टरों और चिकित्सा समुदाय को नये सिरे से प्रशिक्षण देकर नये संक्रमणों से निपटने के लिए तैयार करना जरूरी है। चंडीगढ़ के शिक्षा सेवा निदेशक ने समुदाय स्वास्थ्य केंद्र में अर्ध–चिकित्सा कर्मचारियों के लिए एक जागरूकता और प्रशिक्षण सत्र का

दर्शाई गई पेंटिंग

उद्घाटन किया। इसे नगर के प्रयोगशाला टेक्नालॉजिस्टों के सहयोग से आयोजित किया गया था। रामदरबार में, एक अन्य जागरूकता और प्रशिक्षण सत्र अर्ध–चिकित्सीय कर्मचारियों के लिए आयोजित किया गया जिसमें 70 सहभागी शामिल थे। इस अवसर पर जीएमसीएच–32 के ब्लड बैंक के प्रभारी ने परामर्श एवं जांच के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियों के बारे में जानकारी दी।

युवा संगठन एआईईएसईसी के सहयोग से एचआईवी और एड्स के विषय पर पोस्टर बनाना और व्याख्यान जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें विभिन्न स्कूलों के 400 छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर एक पैनल में विचार–विमर्श का आयोजन भी किया गया जिसमें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवर लोगों ने भाग लिया।

वर्ष 2008 के विश्व एड्स दिवस आयोजनों का समापन सुखना झील पर मोमबत्तियों द्वारा प्रकाश फैलाने के समारोह के साथ हुआ जिसमें 300 लोगों ने भाग लिया। उन्होंने ध्येय के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया और उनमें से कइयों ने खुद आगे आकर चंडीगढ़ राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा लगाये गये बूथ और काउंटर में स्वैच्छिक जांच कराई।

कर्नाटक ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों और नर्सों के प्रशिक्षण का कार्य हाथ में लिया

एड्स के विरूद्ध संघर्ष में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की भूमिका को उजागर किया गया

कर्नाटक राज्य में हर वर्ष लगभग 25,000 नये एचआईवी संक्रमण होते हैं। विश्व एड्स दिवस पर यह प्रतिबद्धता व्यक्त की गई कि सघन रोकथाम कार्यकलापों के माध्यम से इस संख्या में भारी कमी सुनिश्चित की जाएगी। आवाहन कार्यक्रम के दूसरे दौर में मुफ्त एआरटी सेवाएं अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाई जाएंगी और सरकार दूसरी पंक्ति का उपचार प्रदान करने का हर प्रयास करेगी।

कन्नड़ भाषा में एक नाटक का मंचन

इस योजना के अंतर्गत गडग, मंड्या, चित्रदुर्ग, मेडिकेरी, रामनगर और चिकबलपुर जिलों में 27 नये एआरटी केंद्र शुरू करना शामिल है।

एचआईवी और एड्स के विरुद्ध संघर्ष में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया गया। एक नई पहलकदमी की घोषणा की गई जिसके अंतर्गत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की सभी नर्सों को महामारी के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के कार्य में शामिल किया गया। 'निमहान्स' में प्रशिक्षण के लिए 300 नर्सों का चयन किया गया है ताकि वे एचआईवी की रोकथाम में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकें।

रेड रिबन पुरस्कार–उड़ीसा विश्व एड्स दिवस की विशिष्टता

इसरो की मदद से विश्व एड्स दिवस के सीधे प्रसारण पर जबर्दस्त प्रतिक्रिया

विश्व एड्स दिवस से पूर्व के दो महीनों में राज्य में अनेक प्रभावी कार्यक्रम आयोजित किये गये। दूरदर्शन, आकाशवाणी, निजी एफएम चैनलों, स्थानीय केबल चैनलों, ईटीवी और ओटीवी पर 30–दिवसीय संचार माध्यम अभियान चलाया गया, जिसमें पैनल विचार–विमर्श, वीडीओ स्पॉट्स और रेडियो जिंगल्स आदि शामिल थे। इनके माध्यम से लांछन, भेदभाव, स्वैच्छिक जांच और जागरूकता संबंधी संदेशों को प्रसारित किया गया।

आईआरएससी–ओएसबी, भुवनेश्वर के साथ मिलकर निबंध और पोस्टर प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं, बच्चों और महिलाओं के लिए कार्यकलाप आयोजित किये गये। जमीनी स्तर के नेताओं को एक मंच पर लाया गया। सरपंचों, वार्ड सदस्यों और जिला स्तर के कर्मचारियों को इस तथ्य से अवगत कराया गया कि एचआईवी की रोकथाम, नियंत्रण और उपचार के मामले में राज्य की क्या स्थिति है।

भुवनेश्वर की सड़कों पर झांकी

एक दिसंबर को माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, उड़ीसा सरकार, श्री सनातन बिसी ने भुवनेश्वर में एक रैली का उद्घाटन किया जिसमें लगभग 1,000 एचआरजी, एचआईवी और एड्स के साथ जीने वाले लोगों, साझेदारों और वालंटियरों ने भाग लिया। इस अवसर पर एक राज्य–स्तरीय बैठक का आयोजन भी किया गया।

पहली बार एचआईवी और एड्स के विरुद्ध संघर्ष में मुख्य भूमिका निभाने वाले लोगों के अमूल्य योगदान को सम्मान देने के लिए रेड रिबन पुरस्कार वितरित किये गये। राज्य की मधुबाबू पेंशन योजना में पीएलएचए को शामिल करने के लिए समाज कल्याण निदेशक के योगदान की सराहना की गई; मानद सचिव, आईआरसीएस को रेड रिबन क्लबों के गठन के माध्यम से युवाओं के बीच एक आंदोलन चलाने के लिए पुरस्कृत किया गया; और बलारपुर इंडस्ट्रीज लिमिटेड को कोरापुट में एआरटी केंद्र स्थापित करने के लिए सराहा गया। विश्व एड्स दिवस की अन्य विशेषताएं इस प्रकार थीं – आईईसी प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक, मोबाइल झांकी, मोटर वाहनों में स्टिकर अभियान और बैनरप्रदर्शन।

स्वैच्छिक संस्था सीवाईएसडी के ग्राम संसाधन केंद्र (वीआरसी) के माध्यम से एचआईवी और एड्स पर कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण किया गया। यह कार्य भारतीय अंतरिक्ष शोध संगठन (इसरो) के सहयोग से किया गया।

जाने-माने युवा कलाकारों द्वारा एचआईवी और एड्स के संदेशों का प्रचार

विश्व एड्स दिवस आयोजन की विशेषता थी लगभग 1,200 गांवों में चलाया गया मिलाजुला जिला अभियान

सूरत में फिल्म जगत और टेलिविजन के कलाकारों, और प्रसिद्ध खिलाड़ियों ने विशाल जन समूहों को संबोधित किया और एचआईवी से संक्रमित और प्रभावित लोगों के लिए समर्थन जुटाया।

यहां 4,000 लोगों की एक रैली आयोजित की गई और पुलिसकर्मियों तथा नगर निगम के परामर्शदाताओं के लिए कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन किया गया। 25 से अधिक जिला अधिकारियों, 95 टीआई एनजीओ, 12 समाकलित ग्रामीण एचआईवी और एड्स कार्यक्रम साझेदारों, 20 जीवन दीप साझेदारों, 14 संपर्क केंद्रों और साथ ही स्कूलों और कॉलेजों ने भागीदारी की।

पांच आईईसी वाहनों के साथ "जिंदगी जिंदाबाद" नाम का एक जिला अभियान चलाया गया। वाहनों को पांच जिलों से रवाना किया गया। हर वाहन ने 100 दिनों में 15 जिलों से होते हुए 1,200 गांवों तक पहुंच बनाई। गुजरात राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के कार्यों को विज्ञापित करते हुए एम.एस. धोनी के चित्र के साथ 10 लाख पोस्टर भास्कर समाचार पत्र समूह के सहयोग से मुद्रित कर राज्य भर में वितरित किये गये।

पश्चिम बंगाल ने मुख्यधाराकरण (मेनस्ट्रीमिंग) पर ध्यान केंद्रित किया

निजी और सार्वजनिक उद्यमों की एचआईवी और एड्स से वचनबद्धता प्रबंधक पत्र के सभी स्तरों पर सक्रिय भागीदारी में प्रतिबिंबित हुई

पश्चिम बंगाल के सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के उद्यमों ने सभी कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी के साथ राज्य भर में विश्व एड्स दिवस मनाया। नवरत्न एंटरप्राइज कोल इंडिया लिमिटेड ने कलकत्ता–स्थित अपने मुख्यालय में एक सेमिनार आयोजित किया जिसमें कंपनी के चेयरमैन, वरिष्ठ निदेशकों और अधिकारियों ने भाग लिया। पेप्सी कम्पनी ने इंफोटेनमेंट कार्यक्रमों के माध्यम से जानकारी का प्रचार–प्रसार किया, जबकि अंबुजा सीमेंट ने हावड़ा जिले के धूलियागढ़ में एक आईईसी स्टाल लगाया तथा ओएनजीसी ने अपने परिसर को एचआईवी और एड्स के संदेशों से सजाया। रेलवे विभाग ने सभी प्लेटफार्मों में पब्लिक एड्रेस सिस्टम के माध्यम से रोकथाम और लांछन से संबंधित घोषणाएं की। हावड़ा ऑर्थोपैडिक अस्पताल और सियाल्दा के बी.आर. सिंह अस्पताल ने पीएलएचए के नेटवर्कों की नाट्य प्रस्तुतियों के साथ एक दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया।

स्कूल आफ ट्रॉपिकल मेडिसिन ने पीएलएचए के लिए दूसरी पंक्ति की एआरटी जारी की, जहां दो लोगों को यह उपचार प्रदान किया गया। इस विषय पर काफी विचार–विमर्श हुआ। पश्चिम बंगाल वालंटरी डोनर्स फोरम द्वारा सेंट्रल हाल में एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के विषय, रोकथाम और भ्रमों को दूर करने, कंडोम के उपयोग के महत्व, सरकारी स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर के बारे में जानकारी, स्वास्थ्य प्रणाली और प्रबंधन, संक्रमण की रोकथाम और उसे नियंत्रित करने वाली उपलब्ध सेवाओं से संबंधित थे।

गैर–सरकारी संस्थाओं, टीआई साझेदारों और हिस्सेदारों ने आईसीटीसी, कोलकाता के लोगों के लिए टॉल फ्री नं. 1097 और बुलादी के फेज–IV चौथे चरण के

दूसरी पंक्ति का एआरटी उपचार प्राप्त करते हुए लोग

अभियान से संबंधित संदेशों के साथ विभिन्न जिलों में झांकियां निकालीं। मुर्शीदाबाद के पांच जिलों में छात्रों ने 1–10 दिसंबर के बीच रैलियां निकाली। फुटबाल प्रेमी एसोसिएशन द्वारा निकाली गई एक रैली काफी लोकप्रिय रही। साथ ही इस अवसर पर थैलासेमिया और एड्स प्रिवेंशन सोसाइटी ने अलोके यात्रा आयोजित की। राज्य के अन्य स्थानों पर 150 रेड रिबन क्लबों ने जिला स्तरीय कार्यशालाएं आयोजित कीं।

"एमएसएम एडवोकेसी नेटवर्क फार सोशल एक्शन, बांगला" नामक संस्था ने – जो पुरुषों के साथ यौन संपर्क करने वाले पुरुषों के मुद्दों को उठाने वाली एकमात्र संस्था है – "सीमांतीकृत यौनिकताएं: एचआईवी और मानव अधिकार संघर्ष" विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया जिसमें 200 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

एक व्यापक संचार माध्यम अभियान चलाया गया। मेट्रो रेलवे ने 90 दिनों तक अपने 17 मेट्रो स्टेशनों के उपयोग की अनुमति दी। इस प्रकार विभिन्न प्लेटफार्मों पर 117 टेलिविजनों पर विज्ञापन दिखाये गए। बुलादी अभियान ने केवल एक साझेदार के साथ उत्तरदायित्वपूर्ण यौन व्यवहार पर आधारित यौन संपर्क के सुरक्षित तौर–तरीकों, कंडोम प्रोत्साहन और भेदभाव–विरोधी संदेशों पर बल दिया। बिजली के बिलों पर भी विज्ञापन मुद्रित करके घर–घर और व्यावसायिक संस्थाओं तक पहुंचाये गये ताकि मासिक आधार पर स्थानीय समुदायों तक संदेशों को पहुंचाया जा सके।

कोलकाता में बुलादी फेज–IV अभियान

पुडुचेरी ने उच्च जोखिम वाले समूहों तक बनाई पहुंच

बंदियों के लिए संवेदीकरण बैठकों के आयोजन के बाद, पूरे संघ-शासित प्रदेश में सभी बंदियों तक पहुंचने का निश्चय किया गया

कराइकल, यनम और माहे के साथ पुडुचेरी में विश्व एड्स दिवस पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पुडुचेरी में पुलिस अधिकारियों, पारिवारिक परामर्शदाताओं और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए कार्यशालाएं आयोजित की गईं। हैड कांस्टेबल से ऊपर के पद के 112 पुलिस अधिकारियों ने इनमें भागीदारी की। कार्यशालाओं का विषय यह था कि उच्च जोखिम वाले समूहों के मामलों को निपटाते समय पुलिस अधिकारियों को कानूनी या मानव अधिकारों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

पुडुचेरी केंद्रीय कारावास और कराइकल कारावास, दोनों में बंदियों के लिए आयोजित संवेदीकरण कार्यक्रम को काफी पसंद किया गया। इसके अंतर्गत एचआईवी और एड्स के मूल तथ्यों, रोकथाम की पद्धतियों और योग पर सत्र आयोजित किये गये। वर्ष 2009 में सारे बंदियों (सजायाफ्ता और विचाराधीन) को इस कार्यक्रम की परिधि में लाया जाएगा।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और पारिवारिक परामर्शदाताओं के पहले बैच के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम समाज कल्याण विभाग के सहयोग से आयोजित किया गया जिसमें 50 लोगों ने भाग लिया। पुडुचेरी राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने घोषणा की है कि वर्तमान वित्त वर्ष में भी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

पुलिस अधिकारियों के लिए एचआईवी और एड्स पर एक–दिवसीय कार्यशाला

आम लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए पुडुचेरी में जानेमाने टेलिविजन कलाकारों द्वारा एक हास्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। युवाओं को शामिल करते हुए एचआईवी के विषय पर साइकल रैलियां और नवाचारपूर्ण चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। विभिन्न सांस्कृतिक दलों द्वारा 165 नाटकों और 20 संगीत कार्यक्रमों के अलावा महिलाओं के लिए सिलाई प्रतियोगिता आयोजित की गई। बस स्टैंडों, व्यस्त बाजार क्षेत्रों और ट्रैफिक सिग्नलों पर प्रभावी और लोगों को याद दिलाने वाले सूचनापट्ट लगाए गए।

आम लोगों तक पहुंचने के लिए महाराष्ट्र ने एक लागत–प्रभावी रणनीति तैयार की

दो सप्ताह तक मोबाइल सब्सक्राइबरों को लामबंद करने के लिए रेडियो, टेलिविजन और एसएमएस का व्यापक उपयोग किया गया और 30,00,000 से अधिक लोगों को परिधि में लिया गया

राज्य में विश्व एड्स दिवस दो विषयों के इर्द–गिर्द था – जागरूकता फैलाने के नये और अनूठे तरीके ढूंढना और महाराष्ट्र राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं को प्रोन्नत करना।

विश्व एड्स दिवस पर टेलिविजन, रेडियो और एसएमएस को कार्यक्रम की पहुंच और कवरेज को बढ़ाने के लिए बड़ी सूझबूझ के साथ उपयोग किया गया। मध्यम और निम्न आय वाले परिवारों पर टेलिविजन के प्रभाव को देखते हुए स्थानीय भाषा में एचआईवी और एड्स, आईसीटीसी और रक्त सुरक्षा पर विशेष टेलिविजन कार्यक्रमों और समाचार के दौरान स्क्रालिंग संदेश दर्शाए गए। साथ ही साथ राज्य के "बी" और "सी" वर्ग के जिलों के 120 सिनेमाघरों में आडिओ–विजुअल विज्ञापन दर्शाए गए। रेडियो का – जिसके ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतम श्रोता हैं – प्रभावकारी ढंग से उपयोग किया गया। लोकप्रिय एफएम चैनलों के संयोजकों ने स्पॉट्स और जिंगल्स के रूप में संदेश प्रसारित किये। शहरी, अर्ध–शहरी और ग्रामीण इलाकों में मोबाइल फोन का उपयोग करने वालों तक संदेश पहुंचाने के लिए एसएमएस का उपयोग किया गया। प्रमुख सेवा–प्रदाताओं ने 30 लाख सब्सक्राइबरों तक एचआईवी और एड्स के संदेश पहुंचाये।

विश्व एड्स दिवस पर भेजे गये एसएमएस

एक असुरक्षित यौन संबंध से एचआईवी का खतरा हो सकता है। इसलिये कंडोम का प्रयोग सही प्रकार से करें।

याद रखें.... एचआईवी से संक्रमित लोग हमारे जैसे ही हैं। उनके साथ भेदभाव न करें।

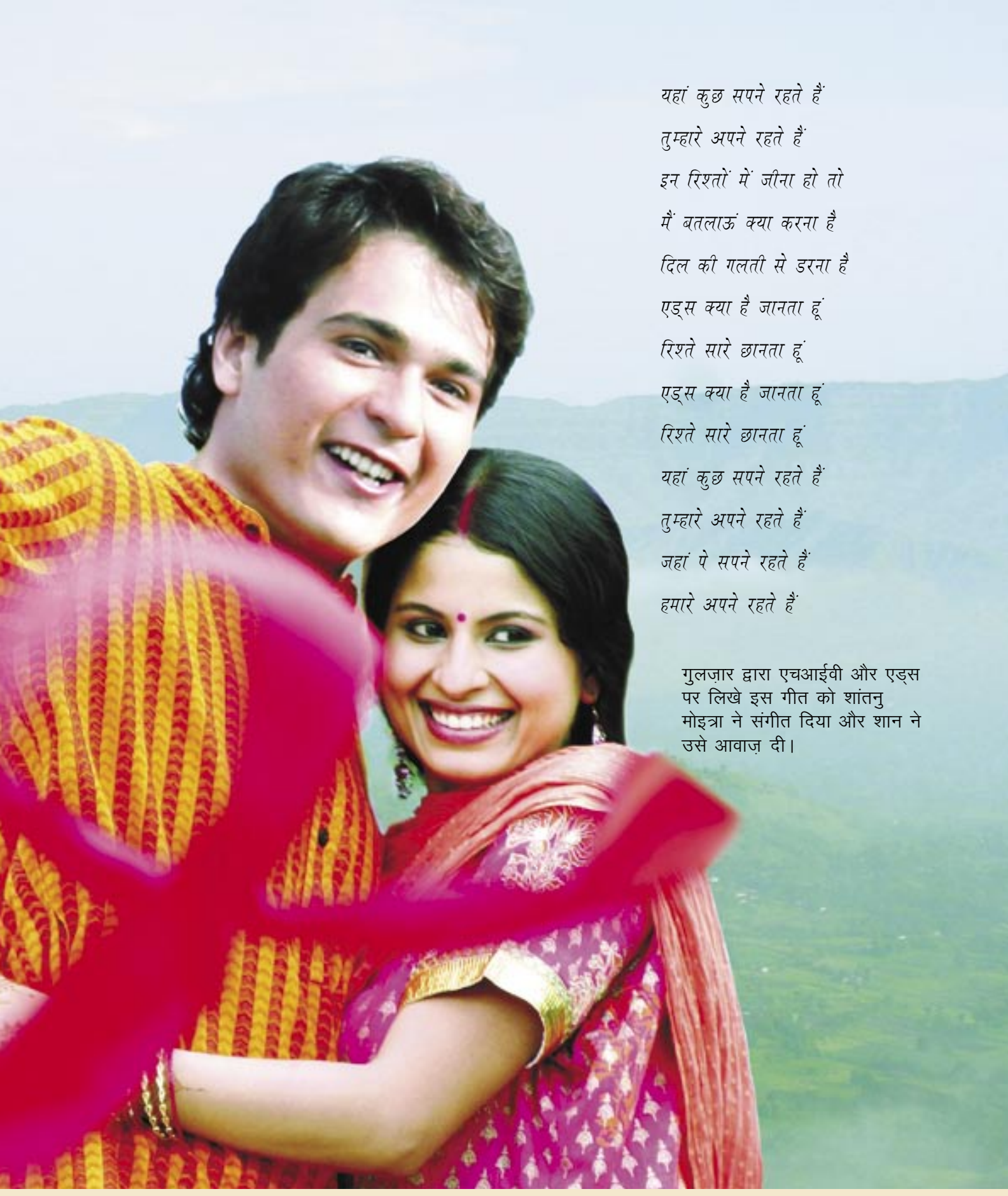

यहां कुछ सपने रहते हैं
तुम्हारे अपने रहते हैं
इन रिश्तों में जीना हो तो
मैं बतलाऊं क्या करना है
दिल की गलती से डरना है
एड्स क्या है जानता हूं
रिश्ते सारे छानता हूं
एड्स क्या है जानता हूं
रिश्ते सारे छानता हूं
यहां कुछ सपने रहते हैं
तुम्हारे अपने रहते हैं
जहां पे सपने रहते हैं
हमारे अपने रहते हैं

गुलज़ार द्वारा एचआईवी और एड्स पर लिखे इस गीत को शांतनु मोइत्रा ने संगीत दिया और शान ने उसे आवाज़ दी।

संपादन प्रमुख: मयंक अग्रवाल, संयुक्त निदेशक (आईईसी)
संपादक–मंडल: डॉ डी. बचानी, उप महानिदेशक (सीएसएंडटी), डॉ एस. वेंकटेश, उप महानिदेशक (आरएंडडी एवं एमएंडई), डॉ एम. शौकत, सहायक महानिदेशक (बीएस), डॉ ए.के. खेरा, सहायक महानिदेशक (टीआईएंडएसटीडी), डॉ संध्या काबरा, सहायक महानिदेशक (लैब सर्विसिज एवं क्वालिटी एश्योरेंस), श्री एम.एल. सोनी, अवर सचिव (आईईसी), श्री प्रदीप सरकार, टीओ (आईईसी), राजेश राणा, टीओ (आईईसी)।

नाको समाचार राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की पत्रिका है।
नवीं मंजिल, चंद्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ, नई दिल्ली – 110 001. टेलिः 011–23325343; फैक्सः 011–23731746, www.nacoonline.org.

संकलन, रूपांकन और मुद्रण – न्यू कान्सेप्ट इंफोरमेशन सिस्टम्स प्रा. लि., नई दिल्ली।
यूएनडीपी की सहायता से मुद्रित